ओजोन पृथ्वी की सुरक्षा कवच

वायु मण्डल की समताप मण्डल का ओजोन स्तर सूर्य के हानिकारक पराबैंगनी किरणों को पृथ्वी पर आने से रोकता है, जिससे कृषि, जलवायु तथा मानव स्वास्थ्य दुष्प्रभावों से सुरक्षित रहता है। इसीलिए ओजोन (O_3) परत को पृथ्वी का छाता या रक्षा कवच कहा जाता है। ओजोन के इस स्तर को जीवन रक्षक स्तर के नाम से भी जाना जाता है। ओजोन परत की मोटाई निश्चित ताप व दाब पर निश्चित होती है तथा मौसम में परिवर्तन के कारण बदलती रहती है। ओजोन (O_3) परत सूर्य विकिरण की पराबैंगनी किरणों को अवशोषित करती है। ओजोन परत (Ultraviolet Radiation) जीव धारियों को सूर्य की झुलसाने वाली किरणों से बचाती है, किन्तु कुछ विषैली गैसों के प्रयोग के कारण पराबैंगनी किरणों को पृथ्वी पर पहुँचने की सम्भावना अधिक हो गयी है। ये पराबैंगनी किरणें जीवन के लिए अनेकों प्रकार से हानिकारण सिद्ध होती है।

ओजोन परत की क्षीणता के कारण –

ओजोन (O_3) परत की क्षीणता का प्रमुख कारण क्लोरोफ्लोरो कार्बन (CFC_s) है। इस गैस को सुपरसोनिक जेट विमान, स्प्रे, रेफ्रिजरेटर, ए0 सी0 एवं एरोसोल आदि में बड़ी मात्रा में उपयोग किया जाता है, जो पर्यावरण में लगातार विसर्जित हो रहा है एवं ओजोन परत का लगातार क्षरण कर रहा है। CFC_s, Cl, No ये गैसें ओजोन (O_3) परत को प्रभावित करते हैं।

प्रभाव 1 –

1- पृथ्वी पर आने वाली पराबैंगनी किरणों (Ultraviolet Radiation) के कारण बांझपन, पौधों का ठिगना होना, मोतियबिन्द एवं कैंसर जैसी भयानक बीमारियाँ हो जाती है एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता में भी कमी हो जाती है।

2- ओजोन ह्रास के कारण पराबैंगनी किरणें पृथ्वी पर आती है, जो जीवों की संरचना में जीन्स, गुण सूत्र का मुख्य आधार न्यूक्लिक एसिड को भी परिवर्तित कर सकती है।

ओजोन के ह्रास को कम करने के लिए एक समझौता किया गया जो कि इस प्रकार है –

माण्ड्रियल समझौता –

ओजोन परत के विनाश के विश्वव्यापी खतरे की समस्या का हल निकालने के लिए 16 सितम्बर 1987 में कनाडा के माण्ड्रियल शहर में एक सभा हुई एवं 33 देशों की एक बैठक में विचार किया गया और माण्ड्रियल प्रोटोकाल नामक समझौते पर 33 देशों ने हस्ताक्षर किये। इस समझौते में ओजोन क्षरण द्रव्यों (ODS) के दो अलग अलग समूहों की पहचान की गयी जिसमें पहला था सी0 एफ0 सी0 (क्लोरोफ्लोरो कार्बन) और दूसरा था अग्निशमन में प्रयुक्त होने वाला हेलन्स। इस समझौते में सी0 एफ0 सी0 एवं अन्य ओजोन रिक्तिकारक पदार्थो Ozon Depletion Substances (ODS) पर प्रतिबन्ध लगाने की बात कही गई है। इसी कारण 16 सितम्बर को ओजोन संरक्षण दिवस मनाया जाता है।

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

प्रार्थना

प्रार्थना के शब्द सुन्दर हों यह आवश्यक नही,
भाषा अलंकार पूर्ण हो यह आवश्यक नही,
और भाव सुसंगत हो यह भी आवश्यक नही,
भगवान न प्रार्थना की लम्बाई देखते है,
न ही भाषा का सौन्दर्य देखते है और न भाव की सुसंगति को देखते है।
भगवान तो भाव के भूखे हैं वो तो हृदय की निष्कपटता, सरलता तथा शुद्धता पर मुग्ध होते हैं।

सर झुकाने से नमाजे अदा नही होती,
दिल झुकाना पड़ता है इबादत के लिये।
पहले मैं होशियार थी इसलिए मैं दुनिया बदलने चली थी,
आज मैं समझदार हूँ इसलिए खुद को बदल रही हूँ।
बैठ जाती हूँ मिट्टी पर अक्सर,
क्योंकि मुझे अपनी औकात अच्छी लगती है।
मैंने सीखा है समन्दर से जीने का सलीका,
चुप चाप से बहना और अपनी मौज में रहना।

एक अन्दाज ही है जो जीवन बदल देता है,
वरना इस दुनिया में नया कुछ नही है।
मनुष्य की पहचान उसके संस्कारों से होती है।

कु0 प्रिन्सी वंसल
बी0 ए0 तृतीय वर्ष

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

KNOWLEDGE IS POWER

Knowledge is power. This is true when it is used for human welfare. Miseries and crimes may be the result of ignorance but for more and worse are the effects of bad use of knowledge. Chemistry is a noble science should it be called harmful science. If it is used to invent poison gases to be let loose on woman and children? It is a clear misuse of knowledge.

The man who knows has an advantage over, the man who does not know. By his medical knowledge, the physician can cure disease and save his patient's life. But the blackmailer, by his knowledge of some guilty secret, can bleed his victim white under the threat of disclosures. In this way the educated classes have always been able to rule over the ignorant. During the middle ages in Europe, the only educated men were the priest. The reading classes very often could not even read and write. They had two appoint priest as their ministers and advisers. In the some way, and for the same reason, a handful of Europeans could control millions of African natives. In the earliest history, the east predominated because of their superior knowledge. The Muslims were then the torch bearer of knowledge. Europe was then sunk in barbarism but with the beginning of the sixteenth centaury the west again became the leader of civilization. Western influence became dominant throughout the world. They established their colonies an Asia land African countries. South Asia remained 1 under the British control for more than a century. It was their superior knowledge and the weapons organization and character which that knowledge had given them that made the white races superior to east.

Lord Tennyson has rightly said, "Knowledge comes but wisdoms lingers". He means that science has provided us with a huge stock of knowledge but unfortunately it is not being but to right use. For example – Automatic power can be employed both for destructive and useful purposes. Its enormous potentialities to destroy life were demonstrated. When in August 1945 two atom bombs were dropped on Japanese cities, Hiroshima and Nagasaki. The devastation caused by them was unprecedented in the history of mankind. Of late, however scientist has been concentrating as harnessing atomic energy for.

Sadhana Tiwari, B. A. Part II

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

मुझे वें छात्र अतिशय पसन्द है

जो –

1. प्रातः उठकर शौचादि क्रिया से निवृत्त हो, नियमित योगासन व्यायाम करते है।
2. अपने माता पिता और गुरूजनों का आदर करते है।
3. पान, गुटखा, बीड़ी, सिगरेट आदि के सेवन की हानिकारक आदतों से दूर रहते है।
4. महाविद्यालय को विद्या का मन्दिर, अपने का विद्याधारक मानकर इसकी परिसम्पत्तियों की संरक्षा एवं स्वच्छता पर ध्यान देते हैं।
5. महाविद्यालय परिसर, कक्ष की दीवारों और सीढ़ियों पर अनुशासनहीन छात्राओं द्वारा थूकने से दुखी होते है।
6. कक्ष के पंखों, विद्युत वल्बों एवं परिसर के फल फूल, पत्तियों को अपना समझकर नष्ट नही करते हैं।
7. नियमित महाविद्यालय में उपस्थित होकर शान्त भाव से पढ़ते है और उत्तम परिणाम प्राप्त कर अपने माता पिता के धन का सदुपयोग करते है।
8. महाविद्यालय में संचालित प्रत्येक पाठ्य सहगामी क्रियाओं में सक्रिया भाग लेते है।
9. सत्पुरूषों से प्रेरणा प्राप्त कर अपनी जीवन शैली से समाज एवं राष्ट्र के लिए उपयोगी बनते है।

प्रबन्धक

भोलानाथ त्रिपाठी

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

भारत विश्व गुरू

भारत जिसे हम हिन्दुस्तान और इण्डिया के नाम से भी जानते है, का नाम दुष्यंत के पुत्र भरत के नाम पर पड़ा। भारत हर काल, हर युग, हर समय में विभिन्न और कठिन परिस्थितियों से जूझता रहा है। और भी हमारा भारत भ्रष्टाचार जैसी जटिल समस्याओं से जूझ रहा है। भारत को विश्व गुरू बनाने में साधु, सन्तो, सन्यासियों, ज्ञानियों, स्त्रियों, पुरूषों और महापुरूषों का योगदान रहा है। चाहे वो त्रेता युग के भगवान राम हो या द्वापर युग के कृष्ण हो या फिर हमारे स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी।

भारत ने विश्व को बहुत अद्भुत वस्तुयें प्रदान की है। भारत ने पृथ्वी और चाँद की दूरी बतायी। भारत ने शून्य की खोज की और विश्व को दशमलव दिया। भारत में सभ्यता सबसे पहले आई।

कृषि – भारत में सर्वप्रथम यातायात साधनो की खोज हुई। महाराजा पृथु ने कृषि की खोज की।

यातायात – भारत में सर्वप्रथम यातायात साधनों की खोज हुई। त्रेता युग में पुष्पक विमान का होना।

संचार व्यवस्था – सर्वप्रथम भारत में जनकपुर से स्वयंवर की पत्रिका भेजना।

भाषा – सर्वप्रथम भारत में भाषा का उद्भव। ऋगवेद विश्व का प्राचीनतम् साहित्य।

लिपि – सर्वप्रथम विश्व में नालन्दा विश्वविद्यालय में पांडु लिपियों का होना।

वस्त्र – सर्वप्रथम भारत में प्रागैतिहासिक काल में बाघम्बर इत्यादि।

परिवार व्यवस्था – प्राचीनतम् साहित्य में वंशवाद का मिलना।

शिल्प – सर्वप्रथम भारत में आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति का होना।

चित्रकला – सर्वप्रथम भारत में जरासंघ की पुत्री की सहेली चित्रलेखा द्वारा भगवान कृष्ण के पौत्र अनिरूद्ध का चित्र बनाना।

संगीत – सर्वप्रथम भारत में भगवान शिव द्वारा संगीत का उद्भव, नारद और सरस्वती द्वारा वीणा वादन करना।

संस्कृति – सर्व समृद्ध, नियमित और कोमल संस्कृति। भारत ने किसी अन्य पर क्षेत्र वर्धन अथवा धर्म परिवर्तन के लिए युद्ध की पहल नही की।

शासन प्रणाली – सर्वप्रथम भारत में जनतन्त्र का उद्भव। महाराजा भरत द्वारा सर्वप्रथम जनतन्त्र की घोषणा कर जनता को उसका अधिकार देना।

अर्थव्यवस्था – सबसे समृद्ध अर्थव्यस्था का प्रारम्भ। भारत में प्रारम्भिक आक्रमणों का मूल कारण भारत का सर्वाधिक धनी होना।

विनिमय – सर्वप्रथम और समृद्ध भारत में प्रागैतिहासिक काल में भी वस्तु विनिमय के प्रमाण।

भारत विश्व में सर्वश्रेष्ठ देशों में से एक है और इसका सारा श्रेय उन भारतीयों का है जिन्होने हमारे देश को सर्वश्रेष्ठ एवं सक्षम बनाया है। इन्ही महापुरूषों के कारण हमारा भारत विश्वगुरू कहलाता है।

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

भारत विश्वगुरू कहलाता है,
ये सिर्फ गेहूँ, चावल नही उगाता है,
महापुरूषों से इसका नाता है,
ये वीरों का जन्मदाता है।

इतिहास लिखते है लोग हाथों से,
यहाँ हाथ देखकर भविष्य लिखा जाता है,
यहाँ पत्थर भी भगवान बन जाता है,
तभी तो मेरा भारत विश्व गुरू कहलाता है।

दुर्गेश तिवारी
प्रवक्ता, समाजशास्त्र

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

EDUCATION IS BOON FOR MANKIND

Purpose of education is to make complete and fulfilled individual so that he will make a fulfilled society and nation. Education is responsible to produce extremly orderly person in society who will be orderly in himself in his family, society and nation. Then only everything will be fulfilled, harmonious and coherent. Only a cordial man can extend friendship and only a coherent nation can establish fulfilling relations with other nation.

Education means, one who knows right, thinks right and fiction right. Education makes a man capable of doing all the things, education basically cultures a man feeling at home with everything and enjoying one's awareness that being home of all knowledge.

Education is the soul and mind of civilization is much glorious and external whose education system is perfect on both material as well as spiritual levels. This is possible when education system will provide both subjective and objective knowledge.

Unfortunately present system of education is lacking the knowledge of subject. It is incomplete because it only gives the knowledge of the object. Except the knowledge of the knower, the knowledge of object is baseless and ignorance about the subject increase more rapidly than the knowledge. No doubt nowadays education has made modern life comfortable than ever before but it can not satisfy fully the spiritual goal. Modern education does not provide scope to know the knower himself. For progress knowledge of the knower along with other disciplines are necessary.

Dezi Tiwari

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

PLEDGE

World is a family.

The whole world is our family.

We are proud of it prosperity and different culture.

We take a vow to create positively in the world consciousness through which we can bring success to the projects for creating heavens on earth.

By - Dezi Tiwari

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

''अस्माकं जीवने भगवदगीतायाः महत्वम्''

''गीता सुगीता कर्तव्या, किमन्यैः शास्त्र विस्तारैः।
या स्वयं पद्मनामस्य, मुखपदमाद विनिः सृता।।

(महर्षि व्यास)

कस्य न विदितं भगवतगीताया गुणगौरवम्। गीता भारतीयानां पवित्रं धर्मग्रन्थोऽस्ति। अतः अस्माकं धर्मस्य सर्वेऽपि सारभूताः सिद्धान्ताः प्रतिपादिताः सन्ति।

महाभारत युद्धे, युद्ध विमुखाय अर्जुनाय, श्री कृष्णेनयः उपदेशः दत्त सः एव गीतायां वर्णिता अस्ति। उक्तं च –

''सर्वोपनिषदो गावो, ढोग्धा गोपालनन्दनः।
पार्थो वत्सः सुधीभोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्।''

गीता अस्मान यत् ज्ञान ददाति तत् अन्यत्र दुर्लभम् अस्ति। गीतायां कर्मकाण्डस्य, ज्ञानकाण्डस्य, उपासनाकाण्डस्य च सम्यक मीमांशा कृत्यं वर्तते। गीतायाम उपनिषदां सारः मनोज्ञया पद्धत्या नीरस शैल्यां समामिहिताः सन्ति, ते एव भावाः साधिष्टया, भाव प्रकाशनशैल्या विशदं समासतश्च प्रस्तूयम्ते। गीत न उपनिषदामेव, अपितु समग्रस्यापि पूर्ववर्ती वाऽमस्यसारं उपस्थापयति। अतएव लोकप्रिय विश्वप्रिय चाभवत। आद्यशंकराचार्येण गीतायै उक्तं –

''गेयं गीतानामसहस्रं ध्येयं श्रीपतिरूपमजस्रम।
नेयं सज्जनसंगे चितंदेयं दीनजनाय च वित्तम्।।''

1. गीताया कर्मयोगस्य महत्वम् – अनासक्त भावेन कार्यकरणं गीताया परमादेशः –

''कर्मण्येवाधिकारस्ते, मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुभूर्मा ते संऽोत्स्वत्कर्माणि।।''

मानवानां कर्तव्या पालनेनैव जीवनस्य साफल्यं भवति, अन्यथा तस्य जीवनम् विनश्यति। हि आकर्मणः कर्म न्यायः अकर्मणः ते शरीरयात्रा अपि न प्रसिद्धयेत्।

''नियतं कुरू कर्म त्वं,
कर्म न्यायो हि अकर्मणः।
शरीरयात्रापि च ते,
न प्रसिद्धयेद कर्मणः।''

जीवने सर्वकर्म परित्यागेऽपि यज्ञदान तमसाम अपरिहार्यत्वं अवश्यकर्तव्यं च ग्रहेमेधिनां यतीनां च कृते निरूप्यते। जीवनस्य पावनत्वं त्रयाणप्येषां फलम् –

''यज्ञदानतपः कर्म, न त्याज्ये कार्यमेव प्रत।
यज्ञोदानं तपश्चैव, पावनानि मनीषिणाम्।।

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

स्वाधर्मानुशिष्दं कर्म कथमपि न परिहेयम्, अनासक्ति भावना या क्रियमाणं कर्म न बन्धन हेतुः न च विषयोपलेपसाधनं अपि। अपितु दुख पाप विनाशनत्वाद, योगरूपमं सत्। मिविधतापापहं संजायते। उच्यते च –

''बुद्धियुक्तो जहातीह, उभे सुकृतदृष्कृते।
तस्मोद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम्।।''

अतएव इति प्रकारेण, न केवलं भारतीयाः वैदेशिकाः अपि विद्वांसः एकमत्येन गीताया महत्वं स्वीकुर्वन्ति सम्पूर्ण देशे महर्षि वेद व्यासस्य कृपास्ति यत तस्येन गीता ग्रन्थरतनं वयं प्रदायतो। यथा मानवस्य कल्याणं भवति –

''नामऽस्तुते व्यास विशालबुद्धे फुल्लारविन्दायत्रपत्रनेत्र।
येन त्वया भारतैलपूर्णः प्रज्जवलितो ज्ञानमयः प्रदीपः।।''

अवधेश तिवारी

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

साफ्टपॉवर राज्य नीति का एक बेहतर विकल्प

''जहाँ काम आवै सुई, कहा करे तलवार''

कवि सदियों पहले तलवार के बढ़ते वर्चस्व के रूबरू सुई को रख कर बता दिया था कि तलवार को रामबाड़ समझना गलत है। इस दुनिया के सभी राज्य तलवार के बल पर चलते रहे है और परिणाम सामने है। मनुष्य की सृजनशीलता और विवेक को बार बार ध्वस्त करता युद्धों का अनवरत सिलसिला।

सीधी भाषा में कहे तो सुई है ''साफ्टपॉवर'' और ''तलवार'' है हार्डपॉवर। यह रूपक विषय के अधिकांश आयामों की ओर संकेत करने में सक्षम है। तलवार सत्ता और वर्चस्व का प्रतीक है जबकि सुई सर्वप्रियता का प्रतीक है।

राज्य का निर्माण सत्ता को बनाये रखने के लिये हुआ है। समाज में कानून व्यवस्था बहाल करने और हस्तक्षेप से रक्षा के लिए एक संप्रभु राज्य नितांत आवश्यक है। इसी लिए सभी राज्य पुलिस और सेना के सहारे चलते रहे है। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो में कूटनीति के साथ साथ युद्ध भी उपकरण की तरह प्रयोग होते रहे है। कूटनीति संवाद के साथ साथ शक्तिशाली द्वारा कमजोर को धमकाकर भी चरितार्थ होती है। जैसा कि वर्तमान में अमेरिका एवं चीन जैसे देशों द्वारा यह कूटनीति अपनायी जा रही है। युद्धशास्त्री 'क्लाउस विट्ज' ने इसका सूत्रीकरण करते हुए कहा है कि 'युद्ध राज्य की नीतियों के कार्यान्वयन का ही एक तरीका है।'

यह 'हार्ड पॉवर' का तरीका है जिसमें शस्त्र बल या धन बल से दूसरों को अपने अनुकूल बनाया जाता रहा है। पर इससे बीसवीं सदी इतिहास की सबसे त्रासद सदी बन गई जिसमें दो विश्वयुद्ध, शीत युद्ध एवं अनेक युद्ध लड़े गये। वियतनाम, ईराक, अफगानिस्तान एवं अन्य देशों में अमेरिकी हस्तक्षेप इसका ज्वलंत उदाहरण है जो इसे एक 'हार्ड पॉवर के रूप में प्ररस्तुत करते है।

'साफ्ट पॉवर' की अवधारणा को अच्छी तरह विकसित करने का श्रेय हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर 'जोसेफ नइ' को जाता है। 1990 में उनकी पुस्तक 'बाउंड टू लोड : द चेजिंग नेचर ऑफ अमेरिकन पॉवर' प्रकाशित हुई। इस पुस्तक में दबाव और दमन की जगह सहकार को अपनाने की वकालत थी। 2004 में उनकी दूसरी पुस्तक 'साफ्ट पॉवर : सक्सेस इन वर्ल्ड पालिटिक्स' नइ के विचारों की स्वीकृति सारी दुनिया में तेजी से बढ़ती गयी। स्वीकार्यता का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के जनरल सिक्रेटरी 'हू जिन्ताओ' ने 2007 में पार्टी को सम्बोधित करते हुए कहा कि चीन को साफ्ट पॉवर का उपयोग बढ़ाते जाना चाहिए और आज यह बात जग जाहिर है कि चीन अपनी सैन्य शक्ति बढ़ाने के साथ ही छोटे देशों के साथ सहकार और मदद के समझौते भी करता जा रहा है जिससे उसकी लोकप्रियता भी बढ़ रही है। जोसेफ नइ का मानना है कि 'सिडक्शन इज मोर इफेक्टिव दैन कोएर्सन' यानी की देशों को मोह लेना। उन्हे आतंकित करने से अधिक प्रभावशाली है। उनके अनुसार 'साफ्ट पॉवर' पावर का दूसरा चेहरा है जो दूसरे देशों से खशी–खुशी वह करवा लेता है जो

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

चाहता है। यह तरीका कम खर्चीला, मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालने वाला और अधिक स्थाई साबित हुआ है क्योंकि 'साफ्टपॉवर' दो देशों की जनता को भी निकट लाता है इसका प्रभाव यह होता है कि सरकारों के बदलने पर भी उनके सम्बन्ध नही बदलते।

यह तरीका उन राज्यों के लिए उपयुक्त तो है ही जिन्हे 'साफ्ट स्टेट' कहते है परन्तु अब तो दुनिया के शक्तिशाली देशों के द्वारा भी अधिकाधिक अपनाया जा रहा है। क्योंकि यह 'मानवीय चेहरे वाला पूंजीवाद' (कैपटलिज्म विद ह्यूमन केस) के लिए बहुत उपयुक्त है।

अन्त में भारत के सन्दर्भ में इस कार्यनीति को परखना आवश्यक है। सबसे ज्वलन्त उदाहरण है भारत पाक सम्बन्ध। भारत का 'हार्ड पॉवर' पकिस्तान के साथ प्रतिद्वन्द्विता में जरा भी ढील नही देता इसके कारण सीमा पर सदैव युद्ध जैसी परिस्थितियों और परमाणु हथियारों की होड़ बढ़ रही है। भारत जैसे अपेक्षाकृत कम प्रति व्यक्ति आय वाले देश के लिए भारी रक्षा बजट देश की तकनीकि प्रगति में बाधक है वहीं दूसरी ओर पाकिस्तान की स्थिति तो इससे भी बदतर है। 'साफ्ट पॉवर' दोनों देशों की साझा परम्परा और विरासत पर बल देता है हुआ दोनों देशों की जनता को निकट लायेगा।

इसी सन्दर्भ में भारत सरकार के कुछ ठोस कदमों को चिन्हित किया जाना आवश्यक है। बांग्लादेश के साथ अन्तः स्थलीय क्षेत्रो के आदान प्रदान का समझौता, श्रीलंका का कच्चातिवु द्वीप पर अधिपत्य स्वीकार करना, लुक ईस्ट पॉलिसी के तहत पूर्वी देशों को आर्थिक सहयोग, जी 20 सम्मेलन में भारत के प्रधानमंत्री द्वारा यूरो जोन को संकट से उबारने के लिए 20 अरब डालर के वादे को इसी सन्दर्भ में देखा जा सकता है। नेपाल और भूटान जैसे देशों में भी भारत अवसंरचना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

राज्यों में अपनी स्वीकार्यता और दृढ़ता बनाये रखने के लिए लगातार अपनी नीतियां बदली है। हार्ड की जगह साफ्ट पॉवर और सहकारिता राज्यों की एक नवीन नीति है। उम्मीद की जाती है कि वर्तमान परिस्थितियों में यह अधिक कारगर साबित होगी।

प्रवक्ता – राहुल रस्तोगी

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

माँ की कसम

मौत की आगोश में जब थक कर सो जाती है माँ,
तब कहीं जाकर थोड़ा सुकून पाती है माँ।
चाहे खुशियों में माँ को भूल जायें दोस्तों,
जब मुसीबत सर पड़ती है तो याद आती है माँ।।

अपने पहलू में लिटाकर रोज तोते की तरह A B C D हमको रटाती है माँ,
घर से जब परदेश जाता है कोई नूरे नजर,
हाथ में गीता या कुरान लेकर आ जाती है माँ।

याद आता है सबे आसर का करियल जवाँ,
जब कभी अपनी उलझी हुई जुल्फों को सुलझाती है माँ।
जब कभी चोट लगती है बच्चों को शरारत में,
तब हाय रे मेरा बेटा कहती हुई आ जाती है माँ।।

पास रहकर कीमत नही समझते उनकी,
जब दूर जाते हैं तो याद आती है माँ।
जब सुखी होते हैं तो भूल जाते है हम अपनी जन्नत (माँ) को,
जब हर तरफ से रास्ता बन्द हो जात है, हमारे लिए तो याद आती है माँ।।

खुशनाज बानों, बी0 ए0 भाग दो

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

जिन्दगी

कभी बचपन की शरारत
तो कभी बुढ़ापे की थकान है जिन्दगी।
कभी आँखों में पानी
तो कभी चेहरे की मुस्कान है जिन्दगी।
कभी काँटो का दामन
तो कभी फूलों की सुगन्ध है जिन्दगी।
कभी सागर की ऊँची लहर
तो कभी नदी की गहराई है जिन्दगी।
कभी इंसानियत की शक्ल
तो कभी हैवानियत की परछांई है जिन्दगी।
कभी सूरज की तपिश
तो कभी चाँद की तरावट है जिन्दगी।
कभी सपनों का बहाव
तो कभी सच की रूकावट है जिन्दगी।
कभी काजल की कली
तो कभी सुबह की निराली है जिन्दगी।
हर पल कुछ नया सिखाती है जिन्दगी
मन में ये नया एहसास जगाती है।
जब दूर नजर आती है जिन्दगी
दिल को याद कराती है जिन्दगी।
काश! कुछ लम्हे और दे जाती जिन्दगी।

मैंने जिन्दगी से पूछा कि तू इतनी कठिन क्यूँ है?
जिन्दगी ने हंस कर जवाब दिया – क्योंकि लोग आसान चीजों की कद्र नही करते।

कु0 प्रिन्सी वंसल, बी0 ए0 भाग तीन

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

अनमोल वचन

1. माँ और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है।
2. खाने की कोई चीज है तो गम।
3. पीने जैसी कोई चीज है तो क्रोध।
4. देने जैसी कोई चीज है तो दान।
5. अज्ञान से ज्ञान ढका हुआ है।
6. दुर्बलों का क्षमा करना वीरों का काम है।
7. मनुष्य का मानव होना उसकी जीत है।
8. निन्दा से सही निन्दनीय आचरण से डरना चाहिए।
9. मनुष्य की पहचान उसके विचारों से होती है।
10. जो धर्म दूसरे धर्म का बाधक हो वो धर्म नहीं।
11. आलस्य ही दरिद्रता का मूल है।
12. सुबह उठकर पहले माता पिता अथवा बड़ों को प्रणाम करो।
13. समय का सदुपयोग करो। दुरूपयोग न करो।
14. माता पिता तथा गुरू का सम्मान करो।
15. संयमहीन मनुष्य पशु तुल्य है।
16. झूठ बोलने वालों को न मिलता है पुण्य न यश।
17. बच्चे हैं फूल अध्यापक है माली।
18. विद्या धनम् सर्वधनम् प्रधानम्।
19. ज्ञान के समान कोई नेत्र नही।
20. कर्ममय जीवन व्यतीत करना ही सफलता की साधना है।
21. शिक्षा ही मनुष्य का समग्र विकास करती है।
22. सबसे बड़ी भूल समय की बर्बादी।
23. धन से साथी मिलते किन्तु सच्चे मित्र नहीं।
24. धन से सुख मिलता है किन्तु आनन्द नहीं।
25. धन से भोजन मिलता है किन्तु भूख नहीं।
26. धन से दवा मिलती है किन्तु स्वास्थ्य नहीं।
27. धन से एकान्त मिलता है किन्तु शान्ति नहीं।
28. धन से पुस्तक मिलती है किन्तु ज्ञान नहीं।
29. धन से आभूषण मिलता है किन्तु रूप नहीं।

कंचन लता, बी0 ए0 भाग दो

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

हार नही होती

लहरों से डरकर नौका पार नही होती।

कोशिश करने वालो की कभी हार नहीं होती।।

नन्ही सी चींटी जब दाना लेकर चलती है।

चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है।।

मन का विश्वास रगों में साहस भरता है।

चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है।।

आखिर उसकी मेहनत बेकार नही होती।

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।।

डुबकियाँ सिन्धु में गोताखोर लगाता है।

जो जाकर खाली हाथ लौट आता है।।

मिलते न सहज मोती पानी में कभी भी।

बढ़ता है उत्साह जैसे हैरानी में भी।।

मुठ्ठी उसकी खाली हर बार नही होती।

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।।

असफलता एक चुनौती है इसे स्वीकार करो।

जब तक तुम न सफल हो नींद चैन त्याग करो।।

संघर्षो का मैदान छोड़ मत भागो तुम।

कुछ किये बिना भी किसी की हार नही होती।।

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।।

सीमा अग्रहरि, बी0 ए0 भाग एक

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

राष्ट्रीय गीत

हमारे देश भारत का ये दुर्दिन कैसा आया है।
जिन्होने देश के हित में लगा दी जान की बाजी।
वतन का भाल ऊँचा कर सुमंगल आरती साजी।
उन्ही वीरों के परिवारों को फुटपाथों पर पाया है।
हमारे देश भारत का ये दुर्दिन कैसा आया है।

चमन के फूल पैरों से कुचलने जो लगे माली।
कहो फिर कैसे आयेंगी बहारे झूमती डाली।
जिसे सौंपा वतन हमनें उसी ने बेंच खाया है।
हमारे देश भारत का ये दुर्दिन कैसा आया है।

दिया बेटी की शादी में जो कुछ भी पास था अपने।
गयी पति संग विदा होके आँखो में लेकर सुखद सपने।
जो जीवन भर की साथी थी उसे जिन्दा जलाया है।
हमारे देश भारत का ये दुर्दिन कैसा आया है।

हैं शिक्षा के भी मन्दिर जो न दे पाते सही शिक्षा।
बिगड़ते जा रहे है बच्चे न पढ़ने की रही इच्छा।
जिसे समझा था कुल दीपक वो जीरो लाया है।
हमारे देश भारत का ये दुर्दिन कैसा आया है।

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

अजन्मी बेटी के गुहारः भ्रूण हत्या के खिलाफ मुहिम

रोकर कहे अजन्मी बेटी मुझे न मारो माता।
मेरे साथ तुम्हारा क्या अब शेष न कोई नाता।
भूल हुई क्या मुझसे जननी? जो तुम इतनी रूठी।
बाँध रखी मन में तुमने क्या दुविधा झूठी?

माँ मैं अंश तुम्हारी हूँ, जीने दो मुझे न मारो।
मुझे गर्भ में बढ़ने दो, प्यार करो पुचकारो।
धड़क रहा है दिल डर से मेरा, भय से काँप रही हूँ।
अपनी लुटती मिटती रेखा नाप रही हूँ।

मुझे राह दे दो जीवन की, दे दो तनिक सहारा।
हुआ जमाना आज अजन्मी बेटी का हत्यारा।
प्यारी माँ, मुझको मत मारो, मुझको भी जीने दो।
छाती से चिपका कर मुझको ममतामृत पीने दो।

तीन माह हुए है मुझको गर्भ में तुम्हारे आये।
भूल हुई क्या मुझसे माँ, कोई तो मुझे बताये।
नही बनूँगी बोझ तुम्हारा, जग में नाम करूँगी।
देखेंगे सारी दुनिया, मैं ऐसा काम करूँगी।

बेटों का सब दे देना, मैं तुझसे कुछ न लूँगी।
किरण, कल्पना, प्रतिभा सा भारत को गौरव दूँगी।
बुझे न मेरा जीवन दीपक, हँसने दो उजियारा।
हुआ जमाना आज अजन्मी बेटी का हत्यारा।

तेरे सारे काम करूँगी, बनकर तेरी दासी।
सह लूँगी सारा दुख, पीड़ा भूखी, प्यासी।
मन्दिर, मेला मुझे घुमाने कभी न लेकर जाना।
बेटों के संग जाना, मेरी खातिर कुछ न लाना।

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

जो देगी तो खा लूँगी, जो देगी पी लूँगी।
खेल, खिलौने, गुड्डा, गुड़िया के बिन मैं जी लूंगी।
किन्तु गर्भ में मुझको न मारो, सुन लो मेरी विनती।
चाहे मुझे न गिनना, जब होगी बेटों की गिनती।

अपना जीवन दान माँगते, मैने हाथ पसारा।
हुआ जमाना आज अजन्मी बेटी का हत्यारा।
बेंटो को बंटवारा देना, मुझे न देना हिस्सा।
किन्तु माता मत मुझको मारो, खत्म करो मत किस्सा।

बेटे तब तक साथ रहेंगे, जब तक हैं वे कुवाँरे।
जीवन भर जब चाहो माँ, आना बेटी के द्वारे।
साथ तुम्हारे बीस बरस रह, दूर चली जाऊँगी।
एक साल में एक दिवस को, राखी पर आऊँगी।

प्यारे पिता अजन्मी इस बेटी पर दया दिखाओ।
मुझे जन्म से पूर्व न मारो, मुझे न दूर हटाओ।
डूब रही है मेरी नैया, मिलता नही किनारा।
हुआ जमाना आज अजन्मी बेटी का हत्यारा।

जीवन भर वार नही मुझे दुलार चाहिए।
मेरी उंगली थाम लो माँ, मुझे तुम्हारा प्यार चाहिए।।

आरती शुक्ला, बी0 ए0 भाग एक

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

MMM – "The Great"

MMM is a group of stars.
With children shining as as bright as mars.
The teachers are very noble and great.
And teach us not to be late.
MMM is a group of stars.
As upon it, God blessing shower.
Athlates bring us joy and fame.
And because we are from MMM.
We will keep up its name.
MMM is a group of stars.
We, the students bloom here like flowers.
It has got a beautiful building.
And over 'Director' is the main source of light.
For all forms of our life.

Arti Shukla, B. A. Part I

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

पत्र

सेवा में,

आदरणीय रसगुल्ला चाचा और जलेबी चाची। आपको मेरा रस भरा प्रणाम। मैं यहाँ कुशल से हूँ। आशा है कि आपके ऊपर मक्खियाँ भिनभिनाया करती होंगी। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मेरी बड़ी बहन बर्फी की शादी लड्डू नगर के प्रसिद्ध मक्खन लाल पेड़ा प्रसाद के सुपुत्र खीर मोहन के भांजे गुलाब जामुन के साथ निश्चित हुयी है। दही बड़ा फूफा जी को और कचौड़ी मल मामा जी को निमन्त्रण दे दिया जायेगा। समोसा भइया और पपड़ी भाभी को लाना न भूलियेगा। बड़े फूफा ब्रेड पकौड़ा और गाजर का हलवा छोटी बुआ चमचम बड़ी बुआ आ रही है।

आशा नही पूरा विश्वास है कि आप लोग उपस्थित होकर वातावरण को चिपचिपा बनाने में सहयोग करेंगे।

आपकी लाडली

इमरती रानी

रोहिणी अग्रहरि, बी0 ए0 भाग एक

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

Thank you God for the world so sweet.

Thank you God for food we eat.

Thank you God for the birds that sings.

Thank you God for everything.

कोशिश करने वालो की कभी हार नही होती।।

नन्ही सी चींटी जब दाना लेकर चलती है।

चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है।।

मन का विश्वास रगों में साहस भरता है।

चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है।।

आखिर उसकी मेहनत बेकार नही होती।

कोशिश करने वालों की हार नही होती।।

असफलता एक चुनौती है स्वीकार करो।

कमी क्या रह गई देखो और सुधार करो।

जब तक न सफल हो नींद चैन त्यागो तुम।

संघर्षो का मैदान छोड़ मत भागो तुम।

कुछ किये बिना ही जय जयकार नही होती।

डुबकियाँ सिन्धु में गोताखोर लगाता है।

जाकर खाली हाथ लौट आता है।

मिलते न सहज मोती खारे पानी में।

बढ़ता दूना उत्साह इसी हैरानी में।

मुठ्ठी उसकी खाली हर बार नही होती।

कोशिश करने वालों की हार नही होती।

रीना अग्रहरि

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

Joke of an Interview

A candidate enter the room and sits down before the interview board –

Member – Well, What is your name?

Candidate – Surya Prakash Sir.

Member – How do you write your name in English?

Candidate – Sun Light Sir.

Member – See that you are humorous by the way. What is your father's name?

Candidate – Lifeboy Sir.

Member – What is that?

Candiadate – Jeevan Lal Sir.

Member – What does he do?

Candidate – Sir, in summer he is ICS and in winter he is PCS.

Member – What do you mean by ICS and PCS?

Candidate – ICS stands for ice cream seller and PCS stands for potato chips seller.

Member – What is your qualification?

Candiadte – I am M.A.B.T. Sir.

Member – What does that stand for?

Candidate – Matric appeared but topplet.

Member – Oh my God! OK GOOD.

Candidate – What does that means, Sir?

Member – Get out of here.

Pooja Yadav, B. A. Part I

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

The Sacred River Ganga

Origion and End - The Ganga is a holy river. It come dowm from Gangotri. It ends its journey in West Bengal. Near about 80 miles from Kolkata, it empities itself into the Bay of Bengal.

Why a Holy River - It is considered a holy river. People believe that a dip in its holy water end their sins. So they go to bath in its holy water.

The Legend - There is a legend behind this common belief. It is said that it sagar's sons were free from their sins when the Ganga touched the ashes of their dead bodies. King Bhagiratha prayed to Lord Bramha to send the Ganges to the earth. For this he prayed and fasted. At last his wishes were fulfilled. Thus he gave peaces to the deprted souls of their forfathers.

Shikha Agrahari, B. A. Part I

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

पर्यावरण की सुरक्षा एवं समाधान

पर्यावरण की समस्या का समाधान हरियाली से हो सकता है। कल्पना कीजिए कि कहीं कोई साफ सुथरी झील है। उसके आस पास के पेड़ पौधे पर मोर, तितलियाँ मंडराते है। टैगोर एवं विवेकानन्द ने भी पहाड़ो की गोद में जाकर प्रकृति की गोद में शान्ति पाई। हरियाली से पर्यावरण समस्या का समाधान सम्भव है। जितने प्रकार के पेड़ पौधे होंगे दिमाग उतना ही शान्त प्रसन्नचित होता है।

''आओ मिलकर पेड़ लगाये, हरा भरा ये देश बनायें।
वातावरण को स्वच्छ बनायें, आओ मिलकर पेड़ लगाये।
पर्यावरण की समस्या दूर भगाये।''

मानव जीवन में पर्यावरण का बहुत महत्व है। सम्पूर्ण विश्व में आज इसकी ओर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। वैसे तो सारे संसार में प्राचीन काल से ही पर्यावरण एवं जीवन सुरक्षा पर काफी चिन्तन हुआ है। किन्तु भारत वर्ष में पेड़ पौधों के विकास पर अधिक ध्यान दिया गया है। पर्यावरण और मनुष्य का सम्बन्ध अनादि काल से बहुत गहरा रहा है। पर्यावरण शुद्ध रहने पर ही शरीर एवं परिवार, समाज, राष्ट्र तथा सम्पूर्ण विश्व स्वस्थ्य रह सकता है। पर्यावरण का प्रभाव मानव की शान्ति, सद्भाव, विचार, स्वाध्याय, कुशलता, नैतिकता आदि पर पड़ता है। इस समस्या के प्रति जागृति उत्पन्न करने के लिए हर वर्ष पाँच जून को **विश्व पर्यावरण दिवस** पूरी दुनिया में मनाया जाता है।

क्षमा सिंह, बी0 ए0 भाग तीन

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

धूम्रपान है दुर्व्यसन

धूम्रपान है दुर्व्यसन, मुँह में लगती आग।
स्वास्थ्य, सभ्यता, धन घटे, कर दो इसका त्याग।।
बीडी, सिगरेट पीने से दूषित होती वायु।
छाती छननी सी बने, घट जाती है आयु।।
रात दिन मन पर लदी, तम्बाकू की याद।
अन्न पान से भी अधिक, करे धन पैसा बर्बाद।।
कभी फफोले भी पड़े, चिक जाता कभी अंग।
छेद पड़े पोशाक में, आग राख के संग।।
जलती बीड़ी फेंक दी, लगी कहीं पर आग।
लाखों की सम्पदा जली, फूटे जम के भाग।।
इधर नाश होने लगा, उधर घटा उत्पन्न।
खेत हजारों फँस गये, मिला न उनसे अन्न।।
तम्बाकू के खेत में, यदि पैदा होता अन्न।
पेट हजारों के भरे, मन भी रहे प्रसन्न।।
करे विधायक कार्य, यदि बीड़ी के मजदूर।
तो झोपड़िया से महल, बन जाये भरपूर।।
जीते जी क्यों दे रहे, अपने मुँह में आग।
करो स्व पर हित के लिए, धूम्रपान का त्याग।।

रेखा कुमारी, बी0 ए0 भाग दो

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

ये दुनिया किसी को भी जीने नही देती

- इस शीर्षक की सबसे बड़ी मिसाल पैसे से जुड़ी है। अगर कोई व्यक्ति दिन रात मेहनत करके कमाता है तो लोग उस व्यक्ति को कहते है कि अरे इस पागल व्यक्ति को देखो खाने पीन का सुख नही जानता। देखो तो इस पैसे के दिवाने को। ये तो पैसे के लिए मरा जा रहा है।
- और अगर मेहनत करके दो रूपये न कमाओ तो कहते है अरे! ये तो बड़ा ही निखट्टू है। आलसी, और कमाता तो है नही कामचोर। अरे ये तो बड़ा ही दुष्ट है।
- और यदि पैसा खर्च करो तो कहते हैं कि फिजूल खर्च है। और यदि खर्च न करो तो कहते है कि अरे देखो देखो इस कंजूस को जेब से एक पैसा भी नही निकलता है। सुनने को मिलता है कि ये तो बड़ा ही कंजूस है।
- और यदि आपके पास दो चार हजार रूपये या अधिक पैसा है तो कहेंगे कि ये तो ये दो नम्बर का काम करता होगा।
- और यदि पैसा कम है तो कहेंगे कि यदि सूझ बूझ होती तो यह हालत न होती। अरे क्या ये कमा नही सकता।
- और अगर जिन्दगी भर मेहनत करके पैसे कमा कर पैसे जमा कर दो पैसे के बारे में कहा जाता है कि अरे ये तो बेवकूफ है।
- जब पैसे का सुख नही भोगा था तो कमाया ही क्यूँ था।

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

जानो पानी का मोल

एक सुबह मैंने पानी पीने के लिए पानी का जग उठाया तो वह पूरा खाली था। फिर मैंने भागकर फिल्टर से पानी निकाला तो उसमें पानी नही मिला। तभी मैंने घर के सारे नल खोले तो उसमें से भी पानी नही निकला। मैं बेचैन होकर थोड़ा पानी लेने के लिए पड़ोसी के घर जा रही थी कि दरवाजे पर वो खुद पानी के लिए खड़ी थी और पीने के लिए पानी माँग रही थी। फिर मैं पानी की खोज में घर से बाहर निकल आई और जहाँ कहीं भी पानी माँगा तो लोगों से एक ही जवाब मिला, ''इतनी मुश्किल से खरीदा है ये एक गिलास पानी। पता है कितना है एक बूँद पानी का दाम?'' तभी मैंने पास की एक दुकान से पानी लेना चाहा। तो वहाँ सबसे महँगा पदार्थ पानी था जिसकी कीमत मेरे बजट से बाहर थी। फिर भी जैसे तैसे मुझे एक गिलास पानी मिल गया। मैं गिलास की सील खोलने ही वाली थी कि कुछ लोगों ने मुझसे हथियार के दम पर पानी ले लिया। प्यास से मेरा गला सूख गया था। और मेरे मुँह से आवाज नही निकल पा रही थी।

तभी अचानक मैं चौंक कर नींद से जाग गई और देखा कि कमरे के पास वाले नल से पानी की बूँदे टपक रही थी। मैंने झट से उसे कसके बन्द किया। खैर ये तो सपना था। पर अगर पानी बचाने के लिए हम जागरूक नही हुए तो ये सपना हकीकत में तब्दील होते देर नही लगेगी। पानी के हर बूँद को बचाना जरूरी है। क्योंकि पानी अनमोल है। जल ही जीवन है।

रिन्की कौशल, बी0 ए0 भाग एक

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

चिन्ता रहती है

- वीरों को आन की। किसानों को लगान की। नाविकों को तूफान की। नेता को मतदान की चिन्ता रहती है।
- कन्जूस को मेहमान की। गायक को तान की। विद्यार्थियों को इम्तिहान की। पक्षी को उड़ान की चिन्ता रहती है।
- प्रोफेसर को बखान की। माँ बाप को सन्तान की। भगवान को जहान की। अमीरों को शान की चिन्ता रहती है।
- ऋषि को वरदान की। भिखारी को दान की। मुसलमान को कुरान की। शराबी को सुरापान की चिन्ता रहती है।

दस मोती ज्ञान के

- जीतने के लिए चीज है तो – प्रेम
- पीन के लिए चीज है तो – क्रोध
- खाने के लिए चीज है तो – गम
- देने के लिए चीज है तो – दान
- दिखाने के लिए चीज है तो – दया
- लेने के लिए चीज है तो – ज्ञान
- कहने के लिए चीज है तो – सत्य
- रखने के लिए चीज है तो – इज्जत
- फेंकने के लिए चीज है तो – ईर्ष्या
- छोड़ने के लिए चीज है तो – मोह

पूनम सरोज, बी0 ए0 भाग एक

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

आओ बाँटे खुशियाँ

किसी रोते हुए को आज हँसाए।
किसी की उलझन आज सुलझाँए।।
करें तैयारी इक अनोखे सफर की।
चलो आज खुशियाँ बाँट आयें।।
आओ किसी की आँखों में हम।
सुनहरे भविष्य का सपना चुन आयें।।
किसी की राहों में आज हम।
दुख के सारे काँटे चुन आएं।।
करें तैयारी इक अनोखे सफर की।
चलो आज खुशियाँ बाँट आयें।।
किसी के दिल का दर्द कम कर दें।
किसी के दिल का जख्म आज भर दें।।
फैला दे जो दुनिया में प्रेम की खुशबू।
हम वो महकती बगिया बन जायें।।
करे तैयारी इक अनोखे सफर की।
चलो आज खुशियाँ बाँट आयें।।

उपासना गुप्ता, बी0 ए0 भाग एक

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

जिन्दगी की कीमत

छोटा सा जीवन है, लगभग 80 वर्ष उसमें से आधा 40 वर्ष तो रात को बीत जाता है। उसका आधा 20 वर्ष बचपन और बुढ़ापे में बीत जाता है। उसका आधा 20 वर्ष उसमें भी कभी योग, कभी वियोग, कभी पढ़ाई, कभी परीक्षा, नौकरी, व्यापार अनेक चिन्ताएँ व्यक्ति को घेरे रखती है। अब बचा ही कितना 8–10 वर्ष। उसमें भी हम शान्ति से नही जी सकते। यदि हम थोड़ी सम्पत्ति के लिए झगड़ा करें और फिर भी सारी यहीं छोड़ जाये तो इतना मूल्यवान जीवन प्राप्त करने से क्या लाभ हुआ?

साहिबा बानों, बी0 ए0 भाग दो

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

दोस्ती

जिसके पास हो पैसा।
यह दुनिया उस की हो जाती है।।
कुछ दिन में कर कंगाल उसे।
खून उसी का पी जाती है।।

दोस्ती, प्यार, मोहब्बत।
सब बस एक कहानी है।।
पैसा है दुनिया का राजा।
पैसा ही यहाँ की रानी है।।

दोस्ती, प्यार, मोहब्बत की तो।
हर रोज ही होलिका जलती है।।
यह दुनिया मतलबी है यारो।
बस अपने मतलब से चलती है।।

पिता

जिसके कंधो पर घूमा हूँ।
हर खुशियों को चूमा हूँ।

जिसने मेरी खुशियों के लिए।
हर परेशानी को काटा है।।
गलत राह पकड़ने पर ।
हर पल हमको डाँटा है।।

ऐसे राह दिखाने वाले का।
क्या कर्ज मैं अदा कर सकूँगा?
कोई सोच भी कैसे सकता है?
की पापा को प्यार नही करूँगा।।

नीलू, बी0 ए0 भाग दो

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

बेटी होती बहुत महान

बेटी पैदा होती है जब पहाड़ सा टूट जाता है।
बेटा पैदा होते ही जब जश्न मनाया जाता है।।
कौन जाने बेटा अच्छा हो या शैतान।
मैं तो जानूँ यही बेटी होती महान।।
कल्पना चावला भी एक बेटी थी।
पूरे भारत वर्ष की चहेती थी।।
रोशन किया माता पिता का नाम।
मैं तो जानूँ यही बेटी होती महान।।
नहीं रही कल्पना चावला पर।
देश का नाम रोशन कर गयी।।
वैज्ञानिकों की वह थी शान।
बेटी होती बहुत महान।।
बेटी के साथ न तुम करो अत्याचार।
उसको भी दो तुम जीने का अधिकार।।
हाँथ का दिया ले जाती हूँ।
करते हैं जब कन्यादान।।
मैं तो जानूँ यही बेटी होती महान।।
नारी भी पुरूष बराबर फिर क्यों हो रहा अपमान।
मैं तो जानूँ यही बेटी होती महान।।

गुन्जन गुप्ता, बी0 ए0 भाग एक

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

स्वागतम् गीत

आप आये खुशी संग लाये आपका स्वागत है।

आपका स्वागत है।।

आपके आने से पावन हुई धरती।

आपके आने का अभिनन्दन मैं करती।।

अम्बर ने फूल बरसाये आपका स्वागत है।

आप आये खुशी संग लाये आपका स्वागत है।।

महक मन भाये आपका स्वागत है।

आप आये खुशी संग लाये आपका स्वागत है।।

आपका स्वागत है।।

हँसना मना है

एक आदमी डाक्टर से हाँफते हुए बोला, ''डाक्टर साहब जल्दी चलिए। मेरी बीबी ने पेट्रोल पी लिया है। और घर के चारों ओर चक्कर लगा रही है।'' डाक्टर आराम से बोले, ''इसमें घबराने की क्या बात है? पेट्रोल खत्म हो जायेगा तो खुद रूक जायेगी।

चुटकुले

मोटा आदमी – डाक्टर साहब पतला होना चाहता हूँ। डाक्टर – ये 10 गोलियाँ ले जाइए। मोटा आदमी – इन्हे कैसे और कब खाना है? डाक्टर – इन्हे खाना नही है। रोज 40 बार जमीन पर गिराना और उठाना है।

एक आदमी गंजे आदमी से – आपके गंजा होने से कोई दुखी तो नही है। गंजा आदमी – नही, लेकिन जब मुँह धोता हूँ तो पता नही चलता कि चेहरा कहाँ तक है।

शिक्षा

सभी पाप कर्म अथवा अकुशल कार्यो का न करना और सभी कुशल अथवा पुण्य कर्मो का सम्पादन करना और चित और शुद्ध करना, यही हमारी शिक्षा है।

कु0 मीना, बी0 ए0 भाग एक

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

चुटकुले

- लड़का – चाचा, टी0 वी0 और बीबी में क्या अन्तर है? चाचा – टी0 वी0 बिगड़ने पर बन्द हो जाती है पर बीबी बिगड़ने पर तेज हो जाती है।
- राहुल – मास्टर जी, वह कौन सी कली है जो कभी खिले ना। मास्टर – छिपकली।
- टीचर – मैं जो प्रश्न पूछूँगा उसका जवाब फटाफट देना। टीचर – भारत की राजधानी का नाम बताओ? छात्र – फटाफट
- बेटा – पिता जी चाय पीना स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है या हानिकारक? पिता – अगर कोई पिलाये तो लाभदायक और पिलानी पड़ जाये तो हानिकारक।
- तीन आदमी थे। पहला – मैं लाल पति हूँ। दूसरा आदमी – मैं करोड़ पति हूँ। तीसरा आदमी – मैं अपनी वाइफ का पति हूँ।

कु0 मीना, बी0 ए0 भाग एक

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

माँ और पिता

माँ घर का गौरव तो पिता घर का अस्तित्व होते है।

माँ के पास अस्रुधारा तो पिता के पास संयम होता है।

दोनो समय का भोजन माँ बनाती है।

तो जीवन भर भोजन की व्यवस्था करने वाले पिता होते है।

कभी लगी ठोकर या चोट तो 'ओ माँ' ही मुख से निकलता है।

लेकिन रास्ता पार करते समय कोई ट्रक पास आकर ब्रेक लगाये तो 'बाप रे बाप' मुख से निकलता है।

क्योंकि छोटे छोटे संकटो के लिए माँ है।

पर बड़े संकटो के आने पर पिता ही याद आते है।

पिता एक वट का वृक्ष है जिसकी शीतल छाँव में सम्पूर्ण परिवार सुख में रहता है।

अल्पना मौर्या, बी0 ए0 भाग एक

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

बसन्त गीत

सूझे न आदि अन्त तो समझो वसन्त है।
कोयल करे पुकार तो समझो वसन्त है।
जब सिंह चरै घास तो समझो वसन्त है।
काली और कलूटी लगे जब चाँद सी गोरी।
कजरा लिया लगाय तो समझो वसन्त है।
पियरी पहिन के सरसों गेहुंवा के देखि के।
घुंघटा देयि उघारि तो समझो वसन्त है।
ससुराल जो मुस्कुराये तो समझो वसन्त है।
वैसे तो चाहे जवन महीना होय मगर।
घर आय जाय कंत तो समझो वसन्त है।
सी0 एल0 क है आज नेखनी रूकी।
हम तो अमेठी आय के देखा वसन्त है।
सूझे न आदि अन्त तो समझो वसन्त है।

ममता मौर्या, बी0 ए0 भाग एक

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

चुटकुले

- डाक्टर मरीज से – अब तुम एक दम खतरे से बाहर हो फिर भी तुम डरे हुए क्यों लग रहे हो? आखिर बात क्या है? मरीज – जिस गाड़ी से मेरी दुर्घटना हुई थी उसके पीछे लिखा था जिन्दगी रही तो दोबारा मिलेंगे।
- सेठ नौकर से – तुम बाजार से एक अच्छा सा मेरे लिए दर्पण ला देना जिसमें मुझे मेरा चेहरा दिखाई दे। नौकर बाजार गया और खाली हाथ घर वापस लौटा तो सेठ ने उससे पूछा – तुम दर्पण क्यों नही लाये? नौकर – सेठ जी, मैने पूरा बाजार घूम लिया। सब में मुझे मेरा चेहरा दिखाई दे रहा था।
- विवाह की बात हो रही थी। लड़के वालों ने लड़के की तारीफ करते हुए कहा – हमारा लड़का न्यायप्रिय है। सबको एक नजर से देखता है। लड़की वालों ने कहा – हमारी लड़की बहुत कामकाजी है। हर समय एक टाँग से खड़ी रहती है। विवाह के बाद पता चला कि लड़का काना और लड़की लंगड़ी है।

सरिता, बी0 ए0 भाग एक

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

सफलता की ओर

- ❖ मारना चाहते हो तो बुरी इच्छाओं को मारो।
- ❖ जीतना चाहते हो तो क्रोध और तृष्णाओं को जीतो।
- ❖ खाना चाहते हो तो गुस्से को खाओ।
- ❖ पीना चाहते हो तो ईश्वर भक्ति का शर्बत पियो।
- ❖ पहनना चाहते हो तो नेकी का जामा पहनो।
- ❖ देना चाहते हो तो नीची निगाह करके दो। लेना चाहते हो तो माता, पिता, गुरू का आशीर्वाद लो।

जिन्दगी

जिन्दगी एक गणित है।

जिसमें दोस्ती का जोड़ किया जाता है।

दुश्मनों का घटाव किया जाता है।

खुशियों का गुणा किया जाता है।

बुराइयों का भाग किया जाता है।

गुलाब का फूल

गुलाब का फूल बनो क्योंकि जो मनुष्य उसे अपने हाथों से फेंक देता है उसके हाथ में भी खुश्बू छोड़ देता है।

नीलम गुप्ता, बी0 ए0 भाग एक

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

जीवन परिचय – विलियम शेक्सपियर

शायद ही ऐसा पाठक या लेखक होगा जिसने अपने जीवन में अंग्रेजी साहित्य के पितामह ''विलियम शेक्सपियर'' का नाम न सुना हो या फिर उनकी कोई कविता या नाटक न पढ़ा हो। भले ही ''शेक्सपियर'' ने अपने साहित्य की रचना 400 साल पहले की। पर आज भी उनके नाटक एवं उपन्यास बड़े आलोचनात्मक ढंग से पढ़े जाते है। ''शेक्सपियर'' का जन्म 20 अप्रैल सन् 1564 को इंग्लैंड के मध्य स्थित स्ट्रेटफोर्ड में हुआ था।

उनके पिता का नाम ''जान शेक्सपियर'' और माता का नाम ''मैरी अर्डेन'' था। ''शेक्सपियर'' के पिता दस्ताने बनाने और चमड़े का काम करते थे। उन्हे अपने इस काम में बड़ी सफलता मिली। बाद में उनके पिता ने ऊन और खेती के उपज का व्यापार करके काफी जायदाद कमा ली। ''शेक्सपियर'' अपने माता पिता की 8 सन्तानो में से एक थे।

वीसवीं सदी के आखिर में इंग्लैड में फ्लैग और हैजा फैल गया। ''शेक्सपियर'' की दो बहनें नही रही। ''शेक्सपियर'' की पढ़ाई लिखाई 5 वर्ष की आयु में शुरू हुई। आगे चलकर उन्होने ग्रामर स्कूल में शिक्षा प्राप्त की। इस विद्यालय में ''शेक्सपियर'' ने यूनानी भाषा के कई लेखकों की रचनाये पढ़ी जिनका प्रभाव उनके साहित्य तथा कविताओं में बखूबी देखा जा सकता है। जब ''शेक्सपियर'' थोड़ा बड़े हुये तो उन्हे अपने पिता की आर्थिक मुश्किलों के कारण ग्रामर स्कूल छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। मगर विद्यालय छोड़ने के बाद भी उन्होने अपनी पढ़ाई जारी रखी। ''शेक्सपियर'' ने अंग्रेजी और यूनानी भाषा में निपुणता हासिल कर ली थी। इतना ही नही उन्हे इटालियन भाषा में भी महारत हासिल थी। 1580 के आस पास ''शेक्सपियर'' ने अभिनय के क्षेत्र में पूरी दक्षता के साथ कदम रखा।

उन्होने स्टेटफोर्ड से बाहर जाकर रंगशालाओं में अभिनय किया और अपनी प्रतिभा की बदौलत वह एक मशहूर अभिनेता बन गये। वह अभी अपना अभिनय कौशल निखार ही रहे थे कि एक्टिंग के द्वारा बन्द हो गये। दरअसल वीसवी सदी के अन्त में लंदन में प्लेग की महामारी फैल गई और सरकार ने सभी रंगशालाएँ एक साल के लिए बन्द करवा दी। मगर ''शेक्सपियर'' तो असी प्रतिभावों के धनी थे। जब रंगशालाएँ बन्द हुई तो वह साहित्य साधना में जुट गये। जिनसे कई उपन्यास एवं कविता संग्रह भी शामिल है।

इंग्लैंड की महारानी ''शेक्सपियर'' की प्रतिभा की बेहद कायल और प्रशंसक थी। महारानी को उनकी कविताओं से बेहद लगाव था। कहा तो यह भी जाता है कि महारानी के विशेष अनुरोध पर ''शेक्सपियर'' ने खास साहित्य की रचना की जिसकी प्रशंसा महारानी सार्वजनिक तौर पर करती थी।

''शेक्सपियर'' ने साहित्य तथा रंगकर्म में समान रूप से दखल रखते हुए शीघ्र ही अपनी एक नाटक कम्पनी खोलने के लिए सोचा। इसमें उन्हे सफलता भी मिली। उनकी नाटक कम्पनी ने लगभग 20 वर्ष तक रंगकर्म की यात्रा की। इस दौरान ''शेक्सपियर'' ने अपनी नाटक कम्पनी के द्वारा प्रत्येक वर्ष

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

दो नाटक जरूर प्ररस्तुत करे। इससे ''शेक्सपियर'' के नाटकों में जान आ जाती थी। वह जिस तरह की अभिव्यक्ति करना चाहते थे वह अपनी क्षमता का दोनो स्तर पर भरपूर उपयोग करते थे।

''शेक्सपियर'' की प्रतिभा ने उन्हे एक सफल और अमीर इंसान बना दिया। लेकिन उनका धनवान होना कभी उनकी साहित्य एवं रंगकर्म साधना पर भारी नही पड़ा। दर्शक उनके नाटको के सदा अभिव्यक्ति रहें।

इंग्लैंड की महारानी की इच्छा से ''शेक्सपियर'' के नाटक उनके महल से ही मंचित होते थे। धनोपार्जन के लिए उन्होने दूसरी नाट्य कम्पनियों में भी नाटक खेले। उनके नाटकों को देखने के लिए दर्शको को बड़ी कीमत देनी होती थीं।

हैमलेट, मैकवेथ व एज यू लाइक इट जैसी अति रचनाओं के रचइता ''शेक्सपियर'' 18 साल की उम्र में 26 वर्ष की महिला से शादी की जिसका नाम ''आइना हैथवेव'' था। उनकी तीन संताने हुई। अपनी मृत्यु से पूर्व तक वह स्ट्रेटफोर्ड में ही रहे। अब तक भगभग वह 25 नाटक लिख चुके थे। दुनिया का यह महान लेखक और अदाकार 32 वर्ष की आयु में दुनिया से चला गया।

अपने साहित्य की तरह ''शेक्सपियर'' हमेशा अमर रहेंगे।

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

विश्वास कर दीया जलाकर रखा कीजिए

अपने सिर पर ये एहसान कम से कम रखा कीजिए।

लोगों से जान पहचान कम से कम रखा कीजिए।।

अगर पूरे नही होंगे तो कोई गम भी नही होगा।

इसी लिए दिल के अरमान कम से कम रखा कीजिए।।

जमानें में लोग देखकर जलते हैं दूसरों को।

बाहरी शान कम से कम रखा कीजिए।।

मुसीबतों में भी हमेशा रास्ता मुस्कुराकर बनाइये।

लेकिन गम का ध्यान कम से कम रखा कीजिए।।

मुसीबतों में भी हमेशा हंसते रहा कीजिए।

अंधेरे में यूँ न मायूस हुआ कीजिए।।

कभी तो हमें अपने सपनों की मंजिल मिलेगी।

बस दिल में विश्वास का दीया जलाकर रखा कीजिए।।

सरित अग्रहरि, बी0 ए0 भाग दो

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

पत्र लेखन

एक पत्नी ने अपने पति को पत्र लिखा। उस पत्र में वह विराम चिन्ह लगाना भूल गयी थी और याद आने पर जल्दी जल्दी विराम चिन्ह लगा दिया। उसका पत्र इस प्रकार है –

प्रिय अंकित मेरे,

प्रणाम! आपके चरणों में क्या चक्कर है? आपने कई दिनों से पत्र नही लिखा मेरी सखी को। नौकरी से निकाल दिया है हमारी गाय ने। बछड़ा दिया है दादा जी ने। सिगरेट पीनी शुरू कर दी है मैंने। बहुत पत्र डाले तुम नहीं आये कुत्ते के बच्चे। भेड़िया खा गया है चीनी। घर आते वक्त ले आना खूबसूरत औरत। मेरी नई सहेली बन गयी है माधुरी। इस समय टी0 वी0 पर गा रही है हमारी भैंस। बेंच दी है तुम्हारी दादी। तुम्हे याद करती है तुम्हारी पड़ोसन। मुझे तंग करती है तुम्हारी बहन। सिर दर्द से रोती है बिल्ली। पागल हो गयी है तुम्हारी जमीन। गेहूँ उग आये है चाचा जी के सिर पर। गंज आ गयी है मेरे पांव में। चोट लग गयी है तुम्हारे पत्र को। हर वक्त तरसती रहती है तुम्हारी भावना।

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

शिक्षक दिवस

शि – शिक्षक मार्गदर्शक बनकर जीवन धन्य बनाते है। ज्योति देकर अखण्ड वह विद्यारम्भ कराते।

क्ष – क्षण पल पल दिला शिक्षामृत पिलवाते।

क – कर्णधार जीवन के शिक्षण ही कहलाते है।

दि – दिनकर रश्मि स्वयं बनकर प्रकाशमय हमें बनाते।

व – वरण कर उनके गुणों को ऊँची शिक्षा पाते।

स – सहज ह्रदय, सौम्यता, प्रेम के शिक्षक ही कहलाते।

नमन करे हम उनका। मिलकर शिक्षक दिवस मनाते।

लोकतन्त्र के रंग छूट रहे है।
शान्ति के चबूतरे भी फूट रहे है।।
देख रहे है सब मगर बोलते नही।
ये नेता लोग मिलकर देश लूट रहे है।।

बविता पाठक, बी0 ए0 भाग एक

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

देश गीत

एक देश है, एक देश है, एक हमारा नारा है।
हम हैं वासी भारत के, भारत देश हमारा है।।
हमनें भारत की रचना में, मेहनत की जी तोड़ है।
इस धरती पर बलिदानों की कथा लिखी बेजोड़ है।।
यहाँ नहीं पुरूषों से पीछे रही कभी भी नारियाँ।
इसमें जलती रही सदा ही जीवन की चिनगारियाँ।।

सिंहनाद

जन्म जहाँ पर	हमने पाया
अन्न जहाँ का	हमने खाया
वह है प्यारा	देश हमारा
उसकी रक्षा कौन करेगा	हम करेंगे, हम करेंगे, हम करेंगे
देश की रक्षा	करना सीखो
जीना है तो	मरना सीखो
क्या करोगे	परोपकार
छुआ छूत	भगाने वाले
प्रेम भाव	बरसाने वाले
भारत भाग्य	जगाने वाले
कौन	हम, हम, हम
हम है एक	देश के वासी
उत्तर हो या	दक्षिण वासी
भारत भाग्य	नही विचार
मानव से	हमको प्यार
पेड़ हमारे	सच्चे साथी
राष्ट्र सम्पदा	अुनपम साथी
धरती पर	सौन्दर्य लुटायें
धरती पर ये	यौवन लायें
इसकी रक्षा	हम करेंगे, हम करेंगे, हम करेंगे
कर्म तुम्हारा	सेवा करना

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

धर्म तुम्हारा	सेवा करना
किसकी सेवा	मानव सेवा
किसकी सेवा	पशु पक्षी की
किसकी सेवा	हरियाली की
सत्य शान्ति की	जय हो, जय हो, जय हो

चुटकुले

- ❖ दो छात्रा स्कूल देर से पहुँची। अध्यापक – देर क्यों हुई? पहली छात्रा – मेरा पाँच का सिक्का गुम हो गया था। उसे मैं ढूढ़ रही थी। दूसरी छात्रा – मैं उस पाँच के सिक्के को अपने पैर के नीचे दबाकर खड़ी थी।
- ❖ एक आदमी अंगूर बेच रहा था और वह आलू ले लो, आलू ले लो कहकर चिल्ला रहा था। दूसरे आदमी ने कहा – भाई, आप अंगूर को आलू कहकर क्यों बेंच रहे हो? आदमी बोला – चुप रहो नही तो मक्खियाँ आ जायेंगी।
- ❖ एक अध्यापक कक्षा में पढ़ा रहे थे। अध्यापक – दिल्ली में कुतुबमीनार है। कौन–कौन देखने चलेगा। एक छात्र सो रहा था। अध्यापक छात्र से – तुम सो रहे हो? नही सर, हम तो पढ़ रहे है। अध्यापक – अभी हमनें क्या कहा? छात्र – सर, आपने कहा दिल्ली में कुतिया बीमार है। कौन कौन देखने चलेगा?

ज्योति चौरसिया, बी0 ए0 भाग एक

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

मेरी अपनी राह

हृदय में अपने विश्वास के लिए।
उज्जवल भविष्य की आग के लिए।
मैं प्रतिदिन बढ़ती जाती हूँ।
मानव का क्रमिक विकास के लिए।
पथ कितना भी कठिन हो पर।
क्या रूक जाता है प्रवाह में?

बहना सरिता से सीखा है।
सहना सरिता से सीखा है।
अपने पथ पर अविरल चलते।
रहना सरिता से सीखा है।
दृढ़ हृदय जिसका देख मुदित।
स्वागत करता सागर।

उत्कर्षो में, जय हर्षो में।
सुख के इन सुमधुर स्पर्शो में।
पथ भूल न जाना पथिक कहीं।
जीवन के इन संघर्षो में।
चलने वाले चलते ही हैं।
कब रोक सकी है धूप छाँह।

कुछ खास बातें

- दुनिया में सबसे सस्ती चीज है सलाह। किसी एक से माँगो तो हजारो से मिलती है। सबसे मँहगी चीज है सहयोग हजारों से माँगों तो किसी एक से मिलती है।
- कागज अपनी किस्मत से उड़ता है। लेकिन पतंग अपनी काबिलियत से। इस लिए किस्मत साथ दे या न दे। लेकिन काबिलियत जरूर साथ देती है।
- दो अक्षर का होता है लक। ढाई अक्षर का होता है भाग्य। तीन अक्षर का होता है नसीब। साढ़े तीन अक्षर की होती है किस्मत। किन्तु ये चारों के चारों अक्षर मेहनत से छोटे होते है।

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

स्वागत गीत

स्वागत है श्रीमन का क्या कृपा दृष्टि दी है।
खुशियों से भरी खुश्बू हम सब जन को दी है।
करते हैं नमन हम संग भाई बहन मिलकर।
है धन्य किये सबको प्रभु आप यहाँ आकर।
हर्षित है सब जन भी जो दया दृष्टि की है।
खुशियों से भरी खुश्बू हम सब जन को दी है।
ये धन्य हुआ उपवन अरू गूंज उठा अम्बर।
अधिखिली खिली कलियाँ मदमस्त हुआ मधुवन।
गुलशन से सभी गुल ने क्या खूब दुआ दी है।
गर्वित सितारे भी है मध्य तुम्हे पाकर।
अब तक हमें जो न मिला सब आप दिये आकर।
स्वागत है श्रीमन का क्या कृपा दृष्टि दी है।

आरती देवी, बी0 ए0 भाग एक

सरस्वती वन्दना

मइया शारदे को करते है शत शत नमन।
कर में लेकर सुमन, कर में लेकर सुमन।
मणियों की माला कर में श्वेत वस्त्र धारी माँ।
माथे पे मुकुटवा सोहे हंस की सवारी माँ।
वीणा वाली तुझ पर अर्पित है तन और मन।
कर में लेकर सुमन, कर में लेकर सुमन।1।
अनुपम खजाना तोहरा तू है लीलाधारी माँ।
निधि तू दया की तेरी जाऊँ बलिहारी माँ।
तून दर्शन देकर हर्षित किया मन चमन।
कर में लेकर सुमन, कर में लेकर सुमन।2।
ममतामयी हो तेरी महिमा निराली माँ।
तू ही जोतावाली, तू ही काली, शेरावाली माँ।
सारा जग तेरे चरणों में करता नमन।
कर में लेकर सुमन, कर में लेकर सुमन।3।

आरती देवी, बी0 ए0 भाग एक

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

राष्ट्रीय गीत

आज का दिन मुबारक रहे साथियों।
कौन जाने दोबारा मिले न मिले।
मेरा प्यारा तिरंगा तो लहरायेगा।
ज्योति दुश्मन के घर में जले न जले।
कौन जाने दोबारा मिले न मिले।
ये तो दस्तूर है सारे जमाने की।
कोई मगरूर है कोई मजबूर है।
नींद मखमल पे आती किसी को नही।
लोग मरते सदा नाम के वास्ते।
और नामर्द मरते है धन के लिए।
गलतियाँ मुझसे जो कुछ हुई हो अगर।
उस खता को सदा माफ कर दीजिए।
हम मुसाफिर है कल अपने घर जायेंगे।
कौन जाने दोबारा मिले न मिले।

आरती देवी, बी0 ए0 भाग एक

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

दोस्ती

दोस्त मिलते जहाँ मे बहुत है मगर।
दोस्ती को समझते सभी तो नही।
अगर मिलना है तो कल बिछुड़ना भी है।
दोस्त की लाज रखते सभी तो नही।

अपना जीवन क्या बुलबुला ही तो है।
इस धरा पर उबरकर निखर जायेगा।
कृष्ण की भी दोस्ती सुदामा से थी।
याद रखो तो जीवन निखर जायेगा।

हाथ मिलना मिलाना नही है मगर।
हाथ के साथ दिल भी मिलाया करो।
वक्त के साथ देखो बदलता नही।
दोस्त की दोस्ती को निभाया करो।

पर बिछुड़ना बहुत दूर जाना नही।
नाम इंसानियत का मिटाना नही।
दोस्त का यह जज्बा सलामत रहे।
तुम कभी दोस्ती को भुलाना नही।

दोस्ती क्या है?

1. दोस्ती एक ऐसी नदी है जो कभी सूख नही सकती।
2. दोस्ती एक ऐसी कली है जो कभी मुरझा नही सकती।
3. दोस्ती एक ऐसी पतंग है जो कभी कट नही सकती।
4. दोस्ती एक ऐसी याद है जो कभी भूली नही जा सकती।
5. दोस्ती एक ऐसी जंग है जो कभी हारी नही जा सकती।
6. दोस्ती एक ऐसी ऋतु है जो कभी बदल नही सकती।
7. दोस्ती एक ऐसी पहेली है जो कभी उलझ नही सकती।
8. दोस्ती एक ऐसी किताब है जो कभी बिखर नही सकती।
9. दोस्ती एक ऐसा रिश्ता है जो कभी टूट नही सकता।
10. दोस्ती एक ऐसा प्यार है जो कभी खो नही सकता।

गीता जायसवाल, बी0 ए0 भाग एक

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

RULES OF LIVING

Never put off till tomorrow

What you can today.

Never trouble another for

What you can do yourself.

Never spend your money

Before you have it

Never buy what you do not want

Because it is cheap

Pride costs us more than hunger

Thirst and cold

We seldom repent having

Eaten too little

Nothings is troublesome,

That we do willingly

How much pain evils have

Caused us that have happened

Take things always by the

Smooth handle.

Anshu Sharma, B. A. Part II

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

पर्यावरण शिक्षाः आवश्यकता एवं महत्व

भूमिका – पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि एवं आकाश इन पाँच तत्वों से मिलकर पर्यावरण का निर्माण होता है। जिसमें हमारे सभी जलचर, स्थलचर एवं वायुचर जीव जन्त, नदियाँ, पहाड़, जंगल एवं समुद्र सम्मिलित है। पर्यावरण के वगैर जीवन की कल्पना नही की जा सकती। न केवल मनुष्य बल्कि सभी प्राणियों के लिए शुद्ध पर्यावरण की आवश्यकता होती है। 'परि' और 'आवरण' शब्दों की सन्धि करने पर पर्यावरण शब्द बनता है जिसका शब्दिक अर्थ है जो परितः (चारों ओर) आवृत (ढके हुए) है। अर्थात् जीवधारियों तथा वनस्पतियों के चारो ओर जो आवरण है उसे पर्यावरण कहते है।

पर्यावारण शिक्षा, पर्यावरण के लिए, पर्यावरण के बारे में पर्यावरण के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा है। पर्यावरणीय शिक्षा, प्राकृतिक एवं भौतिक सम्पदाओं का आवश्यकतानुसार लम्बे समय तक विवेक पूर्ण ढंग से उपयोग करने एवं भावी शिक्षा प्राकृतिक सम्पदा के शोषण एवं भौतिक विकास के मध्य साम्यवस्था का वोध कराने वाली शिक्षा है। इस प्रकार पर्यावरण संरक्षण के प्रति जन सामान्य में जागरूकता लाना तथा जनचेतना बढ़ाना ही पर्यावरण शिक्षा है।

पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता – पर्यावरण पर स्टाकहोम सम्मेलन (1972) ई0 में पारित संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर में कहा गया है, ''मानवता ऊर्जा की प्राकृतिक व्यवस्था पर निर्भर है। और सभी सभ्यताओं की जड़े प्राकृति में है। अतः प्रकृति को गिरावट से बचाना आवश्यक है। सरकारों को प्रकृति के संवर्द्धन में अवश्य ही सहयोग करना चाहिए।''

पर्यावरण सम्पूर्ण मानवता के जीवन का आधार है। यह पेड़ पौधो और जीवों को जीवन शक्ति देता है और जीने योग्य वातावरण के साथ साथ मूलभूत आवश्यकताओं रोटी, कपड़ा, मकान एवं कच्चा माल आदि उपलब्ध कराता है। आज की वैज्ञानिक प्रगति, उन्नत प्रौद्योगिकी संसाधनो का अविवेकपूर्ण दोहन इत्यादि के कारण प्रकृति के अस्तित्व पर ही प्रश्न चिन्ह खड़ा कर दिया गया है। यह सर्व विदित है कि जैव विविधता के उचित संरक्षण के लिए स्वच्छ पर्यावरण का होना आवश्यक है। किन्तु दिन प्रतिदिन बढ़ते पर्यावरण असन्तुलन के कारण कई प्राकृतिक वनस्पति एवं जीव जन्तुओ का अस्तित्व से भी जुड़ा प्रश्न है। मानव ने अपने लिए सुख, सुविधा, धन सम्पत्ति जुटाने के चक्कर में पर्यावरण के सभी घटकों का भारी छति पहुँचाई है। खेती करने, गाँव नगर बसाने, कल कारखाने स्थापित करने, रेल लाइनों, सड़क का निर्माण करने के लिए बड़े पैमाने पर जंगलो को काटकर उनका विनाश किया गया जिसके कारण वनस्पतियों एवं उस पर आश्रित जीवों का विनाश हुआ। जिससे भू अपरदन मे वृद्धि तथा मृदा की उर्वरा शक्ति का ह्रास, बाढ़ की सम्भावना में वृद्धि, भूस्खलन में वृद्धि की सम्भावना बढ़ गयी है। कार्बन डाई आक्साइड जैसी गैसों का सन्तुलन बिगड़ गया है।

पेय जल एवं सिंचाई हेतु जल की आपूर्ति सुनिश्चित करने और जल विद्युत पैदा करने के लिए नदियों के पानी को रोकने के लिए बाँध बनाकर हेक्टेयर भूमि को जलमग्न करके वनस्पतियों एवं जीव

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

जन्तुओ का विनाश किया गया। कल कारखानों, तापीय विद्युत गृहो, औद्योगिक इकाई मे उत्पादन हेतु प्राकृतिक स्रोतो से स्वच्छ जल का उपयोग करके अति प्रदूषिद एवं औपचारित गन्दे पानी को नदियों, नहरो, झीलों एवं समुद्र में छोड़कर जलस्रोत को ही प्रदूषित किया है। परिणाम स्वरूप शुद्ध पेयजल का संकट उत्पन्न हो गया है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा किये गये एवं सर्वेक्षण के अनुसार 80 प्रतिशत बीमारियाँ अशुद्ध जल के सेवन द्वारा उत्पन्न होती है।

जलाभाव के कारण नदी जल बंटवारे को लेकर विभिन्न राज्यो में झगड़े की स्थिति उत्पन्न हो गयी है। भूमिगत जल का तीव्र गति से दोहन होने से जल का भूमिगत स्तर घट गया है। अब भूमिगत जल शुद्ध नही रह गया है क्योंकि खेती में कीटनाशको एवं रसायनिक उर्वरक के बढ़ते प्रयोग एवं कल कारखानों के तरल अपशिष्ट पदार्थ धीरे धीरे रिसकर भूमिगत को दूषित करने लगे है। 20 मार्च 2007 ई0 को पर्यावरण संरक्षण से सम्बन्ध अन्तर्राष्ट्रीय संस्था वर्ल्ड वाइड लाइफ फण्ड द्वारा जारी रिपोर्ट के अुनसार विश्व की विलुप्तप्राय 10 नदियों में भारत की पहचान जीवन दायिनी, पवित्र एवं पूज्यनीय नदी गंगा एवं हिन्दुस्तान के नामकरण से सम्बन्ध नदी सिन्धु भी सम्मिलित है।

तेजी से बढ़ते औद्योगीकरण का सीधा प्रभाव वायु मण्डल पर पड़ रहा है। मानव, जीव जन्तुओ तथा वनस्पतियों की जीवन रक्षक गैस आक्सीजन की आपूर्ति करने वाली वायु को मिलो, कारखानों से निकलने वाले धुयें एवं जीवाश्म ईंधन को जलाने से प्रदूषित किया गया है। जिससे न केवल देश का पर्यावरण दूषित हो रहा है अपितु इसका असर पड़ोसी देशों पर भी पड़ता है।

पर्यावरण शिक्षा का महत्व – मानव जीवन और उसकी विभिन्न गतिविधियों के सन्दर्भ में पर्यावरणीय शिक्षा का विशेष महत्व है। पर्यावरणीय शिक्षा को निम्न आधारों पर स्पष्ट किया गया है –

1. मानवीय गतिविधियों से प्राकृतिक सम्पदा का अविवेक पूर्ण शोषण और उससे उत्पन्न पर्यावरणीय असन्तुलन तथा उसके विनाशक प्रभावों के प्रति संचेतनात्मक उत्पन्न करना पर्यावरणीय शिक्षा का कार्य है। पर्यावरणीय शिक्षा का महत्व लोगों में एवं विद्यार्थी जीवन औ इसके उपरान्त भी पर्यावरणीय शिक्षा विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों की जानकारी देती है। प्रदूषण के प्रभावों से अवगत कराती है तथा पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करती है।
2. पर्यावरणीय शिक्षा, पर्यावरण के प्रति विद्यार्थियों के अनिश्चित दृष्टिकोण को एक सुनिश्चित दिशा प्रदान करने में सहायता प्रदान करती है। छोटे छोटे जलीय जीवों, कीड़े, मकोड़े तथा पशु, पक्षी, नदियों, पहाड़ों, वनो एवं वन्य जीवों आदि का पर्यावरण संतुलन में क्या योगदान है। पर्यावरण शिक्षा इसकी जानकारी देती है।
3. पर्यावरण शिक्षा जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणामों को उजागर करती है। बढ़ती हुई जनसंख्या पर्यावरण को किस प्रकार असन्तुलित और प्रदूषित कर रही है।

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

4. पर्यावरण शिक्षा प्राचीन सांस्कृतिक एवं जीवन मूल्यो की शिक्षा है। यह एवं पृथ्वी यानी 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की दृष्टिकोण विकसित करती है। विश्व बन्धुत्व की भावना को विकसित करती है, मानवता को जीवित रखती है तथा 'जियो और जीने दो' की भावना का संचार करती है।
5. प्रकृति एवं मानवीय गतिविधियों के मध्य कैसे सामंजस्य लाया जाय, यह शिक्षा इसक ज्ञान देती है। पर्यावरणीय शिक्षा बताती है कि मानव प्रकृति का दास नही तो प्रकृति का नियंता ही नही वरन वह प्रकृति का एक सहायक अंग है।

भारत में पर्यावरणीय शिक्षा – भारत में पर्यावरणीय शिक्षा का इतिहास अति प्राचीन है। पर्यावरण शिक्षा भारत का अभिन्न अंग है। हमारी संस्कृति में प्रकृति को देव तुल्य माना गया है। हमारे शास्त्रों में पादप, पुष्प, पहाड़, झरने, पशु, पक्षी, नदियाँ, सरोवर, वन, मिट्टी, प्रकाश, वर्षा यहाँ तक कि पत्थर भी पूज्य है।

1 नवम्बर 1980 ई0 को भारत में पर्यावरण विभाग की स्थापनी की गयी और सन् 1985 ई0 में एक नये मंत्रालय का सृजन किया गया, जिसका नाम पर्यावरण एवं वन मंत्रालय रखा गया। सभी आयु वर्गो में पर्यावरण सम्बन्धी शिक्षा के माध्यम से पर्यावरणीय जागरूकता बढ़ाने हेतु वन एवं पर्यावरण मंत्रालय विशेष रूप से प्रयासरत है। मंत्रालय द्वारा पर्यावरणीय जागरूकता लाने के लिए विभिन्न कार्यक्रम बनाये गये है जिन्हे रेडियो, दूरदर्शन, चलचित्रों, पत्रिकाओं के माध्यम से प्रसारित किया जाता है। जुलाई 1986 में पर्यावरण मंत्रालय द्वारा 'राष्ट्रीय पर्यावरण जागरण' अभियान चलाया गया।

पर्यावरण संरक्षण सम्बन्धी संवैधानिक एवं प्रावधान – जन साधारण के प्रति जागरूकता लाने के लिए सन् 1976 में 42 वें संविधान संसोधन द्वारा पारित किया गया और नीति निर्देशक तत्व के अन्तर्गत अनुच्छेद 48 (ए0) तथा मूल कर्तव्यों के अन्तर्गत अनुच्छेत 51 (ए0) (जी0) में निम्न प्रावधान किये गये है।

1. **अुनच्छेद 48 (ए0)** – राज्य देश की पर्यावरण संरक्षा तथा उसमें सुधार करने और वन तथा वन्य जीवों की रक्षा का प्रयास करेगा।
2. **अुनच्छेद 51 (ए0) (जी0)** – राज्य प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी, वन्य जीव है। इसी प्रकार वातावरण के प्रति स्वच्छता, विषैली गैसों का उत्सर्जन, पर्यावरण के प्रति उपेक्षा आदि को नियन्त्रित करने के लिए भारतीय दण्ड संहिता 1860 ई0 में।

भारत में पर्यावरण शिक्षा की समस्याएँ – पर्यावरण शिक्षा लागू करने हेतु कई विनिमय होने के बावजूद कोई विशेष प्रतिफल देखने को नही मिला है। सर्वोच्च न्यायालय ने कक्षा 12 तक पर्यावरण शिक्षा लागू करना अनिवार्य कर दिया है, किन्तु बहुत सारे राज्यों ने इसे लागू नही किया है एवं जनहित याचिका की सुनवाई के दौरान सर्वोच्च न्यायालय ने राज्य सरकारें, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू0 जी0 सी0), राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् को पाठ्यक्रमों में पर्यावरण शिक्षा को एक विषय के रूप में शामिल करने का निर्देश दिया था।

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

निष्कर्ष – आप पर्यावरण असन्तुलन गाँव, शहर, देश की सीमाओं का अतिक्रमण कर पूरे विश्व की समस्या हो गयी है। पर्यावरण संरक्षण के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कई कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है एवं जन सामान्य में स्वच्छ पर्यावरण के प्रति जागरूकता को बढ़ावा दिया जा रहा है। पर्यावरण की चिन्ता किये बिना मनुष्य प्राकृतिक संसाधनों का अन्धाधुन्ध दोहन कर रहा है जिससे पर्यावरण असन्तुलन की स्थिति उत्पन्न हो गयी है।

महात्माँ गाँधी ने कहा है – कि विश्व के संसाधन व्यक्ति की आवश्यकता की पूर्ति के लिए पर्याप्त हैं पर उसके लालच के पूर्ति के लिए पर्याप्त नही है। इस सम्बन्ध में किंकरी देवी वनाम स्टेट आफ एच0 पी0 वाद में कहा गया है –

''प्राकृतिक संसाधनों को सामाजिक विकास के प्रायोजन के लिए दोहन किया जाना चाहिए किन्तु दोहन इतनी सावधानी से किया जाना चाहिए कि पारिस्थितिक और पर्यावरण गम्भीर ढंग से प्रभावित न हो।''

वर्तमान में पर्यावरण सुरक्षा के लिए प्रयास पूरे समाज, समुदाय को मिल जुल कर करना होगा अन्यथा अपने पर्यावरण को प्रदूषित करके हम स्वयं ही अपने स्थिति को नष्ट कर लेंगे। आइये हम सब मिलकर इसके लिए तत्परता के साथ प्रयास करें और भावी पीढ़ियों के लिए आशा की नई ज्योति जलायें।

पण्डित जवाहर लाल नेहरू – 'हमारे देश के भविष्य का निर्माण विद्यालयों में हो रहा है। अतः देश के विकास के लिए सर्व प्रथम हमें विद्यालयों के विकास पर ध्यान देना होगा।'

बढ़ते हुये पर्यावरण असुन्तलन को यदि समय रहते नही रोका गया तो वह दिन दूर नही होगा जब व्यक्ति अपने पीठ पर आक्सीजन का सिलेण्डर लेकर बाहर निकलेगा। नदी, पहाड़, जंगल, वन्य जीव आदि इतिहास की बातें हो जायेंगी तथा भावी पीढ़ी माँ के गर्भ से ही बीमारियों का जंजाल लेकर पैदा होगी।

निर्माणों के पावन युग में, हम चरित्र निर्माण न भूलें।
स्वार्थ साधना की आँधी में, हम वसुधा का कल्याण न भूलें।।

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

DO YOU KNOW

QUESTION - A DRESS WE CAN NOT WEAR?

ANSWER - ADDRESS

QUESTION - WHICH TABLE IS MADE OF PAPERS?

ANSWER - TIME TABLE

QUESTION - A DANGER CITY?

ANSWER - ELECTRICITY

QUESTION - A GATE WE CAN NOT ENTER?

ANSWER - COLGATE

QUESTION - A SHIP WHICH CAN NOT CARRY PEOPLE?

ANSWER - FRIENDSHIP

QUESTION - A NATION IN WHICH WE CANNOT LIVE?

ANSWER – EXAMINATION

MANJ AGRAHRI, B. A. PART I

हास्य व्यंग्य

लम्बू चौबे थे कंजूस।
नाम पड़ा था मक्खी चूस।।
एक बार वें हुए बीमार।
दवा मंगाई मगर उधार।।
खर्च हुए जब रूपये चार।
आया दुगुना उन्हे बुखार।।
बोले अभी दवा लौटाओ।
या मुझको मरघट पहुँचाओ।।
इतनी मँहगी दवा मंगाकर।
दाम कहाँ से भर पाऊँगा।।
सबसे बड़ी राम की माया।
राम भरोसे बच पाऊँगा।।

मंजू अग्रहरि, बी0 ए0 भाग एक

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

WORK IS WORSHIP

"Do not love or worship money! Love people and life! Worship honesty, hard work and integrity."

We do worship because we want something from the almighty. Idleness and laziness could not bring us anything. Self confidence determination and hard work are the key factors of success.

Whatever inventions are seen today is the result of hard work. The will and the hard work of the inventor found their solution. Impossible is possible for the person having strong will.

So it is nothing but hard work that gives us all the things we aspire for or we desire or we think of. So "Work is Worship"

We have a lot of many kids who do not know what works means. They think work is a four letter.

Hina Sheikh, B. A. Part III

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

ENGLISH

ENGLISH LANGUAGE IS THE LANGUAGE OF ENGLISHMAN. BUT THIS LANGUAGE IS SPOKEN ALMOST IN EVERY COUNTRY OF THE WORLD. IT IS AN INTERNATIONAL LANGUAGE. IT IS THE ONLY KEY TO UNLOCK THE WESTERN KNOWLEDGE OF SCIENCE AND TECHNOLOGY. THEREFORE, IT IS ESSENTIAL ON THE PART OF EVERY STUDENT TO STUDY THIS LANGUAGE THOROUGHLY FOR HIS/HER BRIGHT FUTURE AND SUCCESS.

REKHA KUMARI, B. A. PART II

STUDENT

MANY STUDENTS GO TO COLLEGE TO LEARN.
BUT SOME GO THERE WITH CERTAIN CONCERN.
SOME GO TO COLLEGE TO HAVE A WALK.
WHILE OTHER GO THERE ONLY TO TALK.
BUT SOME GO TO COLLEGE TO SHINE LIKE PEARLS.
BUT SOME GO THERE TO LOOK AT GIRLS.
SOME GO TO COLLEGE TO PLAY DIFFERENT GAME.
BUT FOR SOME GOING OR NOT GOING IS SAME.

REKHA KUMARI, B. A. PART II

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

CHARTER IS DESTINY

A FATELIST BELIEVES IN DESTINY. ACCORDING TO HIM FATE IS A PRE WRITTEN THING, CAN NOT BE CHANGED OR MAKE BY THE HUMAN BEINGS. SUCH PEOPLE BELIEVE THAT A MAN'S FATE IS PREORDAINED BY GOD AND MAN HAS NO POWER OVER IS FATE. TO SUCH PEOPLE, DESTINY IS CHARACTER.

WHILE MANY PERSONS BELIEVE THAT MAN IS THE MAKER OF HIS OWN DESTINY AND FATE. A MAN, WHO WINS, IS THE MAN, WHO THINKS HE CAN.

"CHARACTER DEVELOPMENT IS THE GREAT. IF NOT THE SOLE, AIM OF EDUCATION."

A MAN CAN CHANGE HIS FATE, CREATES HIS FORTUNE, WHO BELIEVES IN HIMSELF HAS POSITIVE ATTITUDE, STRONG WILL, FIRM DETERMINATION AND ZEAL TO ACHIEVE THE GOALS. CHARACTER IS NOTHING, BUT THESE QUALITIES, WHICH SHAPES THE CONDUCT OF A PERSON.

SO CHARACTER IS THE REAL DESTINY AND IT IS WRONG TO THINK THAT DESTINY IS SOMEWHAT A PREWRITTEN THING. GOD ALSO HELPS THOSE WHO HELP THEMSELVES.

"SOW AN ACT AND YOU REAP A HABBIT;
SOW A HABBIT, AND YOU REAP A CHARACTER;
SOW A CHARACTER, AND YOU REAP A DESTINY."

ANAM AFREEN, B. A. Part III

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

IMPORTANT: THE AIM OF LIFE

TO LEAD A SUCCESSFUL LIFE IT IS IMPORTANT TO HAVE AN AIM OF LIFE. KNOWING WHERE YOU ARE HEADED AND WHAT YOU WOULD LIKE TO ACHIEVE WILL HELP YOU GO AFTER YOUR GOALS AND ACHIEVE THEM. A MAN WITHOUT AN AIM IN LIFE IS LIKE THE TREE, IT CAN BE SWAYED ANYWHERE DEPENDING ON WHERE THE WIND IS BLOWING. DIFFERENT PEOPLE HAVE DIFFERENT AIMS IN LIFE. SOME AIM TO HAVE TO LIVE GLAMOROUS FLASHY LIVES WHILE OTHER OPT FOR A QUITE LIFE. MANY PARENTS HAVE BIG AMBITIONS CHILDREN TO GET THE BEST EDUCATION AND WORK IN LARGE ORGANIZATION BUT NOT EVERYONE WILL ACHIEVE THIS. NOT EVERYONE WILL GET THAT HIS OR HER PARENT'S TERM AS A CAREER. IN ADDITION, NOT EVERYONE IS CLEVER ENOUGH TO BE A DOCTOR, ENGINEER ETC. MY AIM IN LIFE IS NOT ONLY BE THE BEST THAT CAN BE BUT TO INFLUENCE PEOPLE'S LIVES AS I DO SO. I HAVE LEARNT TO HELP SOLVE PROBLEMS AND MAKE SOMEONE ELSE'S LIFE BETTER.

- IF YOU WANT TO LIVE A HAPPY LIFE, TIE IT TO A GOAL NOT TO PEOPLE OR THINKS.
- IN THE STRUGGLE, BETWEEN LIFE AND DEATH SOMETIMES SURVIVAL IS NOT ONLY WAY TO WIN.

NIDA KHAN

INSPIRING THOUGHTS

- WHEN "ALLAH" TAKES AWAY SOMETHING FROM YOUR HANDS, DO NOT THINK, HE IS PUNISHING YOU. HE IS JUST LEAVING YOU EMPTY HANDED TO RECEIVE SOMETHING BETTER.
- DO NOT TAKE REST AFTER A SUCCESS BECAUSE UNLUCKLY IF YOU FAIL NEXT TIME, SO MANY LIPS ARE WAITING TO SAY THAT YOUR PREVIOUS SUCCESS WAS YOUR LUCK.

NIDA KHAN

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

MOTIVATIONAL THOUGHT

THE SUN SETS IN THE EVENING TODAY WITH THE PROMISE THAT IT WILL RISE AGAIN TOMORROW. HERE'S HOPING THAT THE DAY COMES TO A CLOSE. WITH THE PROMISE THAT THERE WILL BE BETTER TOMORROW.

KILL THE TENSION BEFORE TENSION KILLS YOU.

REACH YOUR GOAL BEFORE GOAL KICKS YOU.

LIVE LIFE BEFORE LIFE LEAVES YOU."

NEVER REPLY WHEN YOU ARE ANGRY.

NEVER MAKE A PROMISE WHEN YOU ARE HAPPY.

NEVER MAKE A DECISION WHEN YOU ARE SAD.

YOU'LL NEVER BE BRAVE

IF YOU DON'T GET HURT.

YOU WILL NEVER LEARN.

IF YOU DON'T MAKE MISTAKES.

YOU WILL NEVER BE SUCCESSFUL.

IF YOU DON'T ENCOUNTER FAILURE.

"CHOICE"

"CHANCE"

"CHANGE"

YOU MUST MAKE A "CHOICE"

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

TO TAKE A “CHANCE”

OR

YOUR LIFE WILL NEVER “CHANGE”

STOP WORRYING ABOUT WHAT YOU HAVE TO LOOSE AND START FOCUSING ON WHAT YOU HAVE TO GAIN.

LIFE IS HARD,

BUT NOT

IMPOSSIBLE

THE WORD ITSELF SAYS

I’M POSSIBLE.

FACT OF LIFE –

IF EVERYONE IS HAPPY WITH YOU.

THEN SURELY, YOU HAVE MADE MANY.

COMPROMISES IN YOUR LIFE.

IF YOU ARE HAPPY WITH EVERYONE.

SURELY, YOU HAVE IGNORED MANY.

FAULTS OF OTHERS.

YOUR LIFE DOES NOT GET BETTER BY CHANCE IT GETS BETTER BY CHANGE.

PRATIGYA OJHA, B. A. PART II

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

माँ

हर एक हद से गुजर गयी माँ।
बच्चे के लिए बाजार में उतर गयी माँ।
माँ के पसीने ने घर में महकाए गुलाब।
अपने अरमान खुद ही कुतर गयी माँ।
जब से बहु आई है वह ही रहती है।
औलादों का कहना है सुधर गयी माँ।
बहु बेटे ने किया था जानलेवा हमला।
जब पुलिस आयी तब मुकर गयी माँ।
अब केवल यादों में नजर आयेगी।
तेरी दुनिया छोड़कर ऊपर गयी माँ।

माँ की दुआ खाली नहीं जाती।
उसकी बदुआ टाली नही जाती।
बर्तन माँजकर भी माँ 3–4 बच्चे पाल लेती है।
लेकिन दुल्हन आने के बाद 3–4 बच्चों से एक माँ पाली नही जाती।

घुटनों से रेंगते रेंगते, कब पैरों पर खड़ा हुआ।
तेरी ममता की छाँव में, जाने कब बड़ा हुआ।
काला टीका, दूध मलाई।
आज भी सब कुछ वैसा है।
मैं ही हूँ हर जगह, प्यार ये तेरा कैसा है।
सीधा सादा, भोला भाला, मैं ही सबसे अच्छा हूँ।
कितना भी हो जाऊँ बड़ा, माँ मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ।

प्रतिज्ञा ओझा, बी0 ए0 भाग दो

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

हँसना मना है

- अध्यापक – आपका लड़का कक्षा में सबसे कमजोर है। पिता – भगवान की कृपा से घर में दो–दो भैंस है। दूध घी की कमी नही है। फिर भी न जाने क्यों कमजोर है।
- जज – तुमने चोर को क्यों नही पकड़ा? सिपाही – क्या करूँ साहब वह ऐसे घर में घुस गया जिसपे लिखा था अन्दर आना मना है।
- सिपाही – जब हमने हाथ उठाया तो आपने अपनी गाड़ी क्यों नही रोकी? मोटर वाला – मैने समझा आप हमें सलाम कर रहे हैं।
- अध्यापक – मेरा नाम बी0 बी0 लाल है। छात्र – यार माई के लाल बहुत देखे थे। पर बी0 बी0 के लाल नही देखे थे।
- डाक्टर – आपकी खाँसी कैसी है? मरीज – खाँसी तो चली गयी मगर आँख दुखती है। डाक्टर – घबराओ मत भगवान ने चाहा तो वो भी चली जायेगी।
- नौकर – उठिये उठिये घर में चोर घुस आया है। मालिक – मुझे नींद आ रही है। कह दो कल आये।
- महिला – जल्दी से मुझे एक चूहेदानी दे दो मुझे बस पकड़नी है। दुकानदार – बहन जी, मेरे पास उतनी बड़ी चूहेदानी नही है जिसमे आप बस पकड़ सकें।
- बन्ता – जलेबी बेंच रहा था लेकिन बोल रहा था आलू ले लो, आलू ले लो। सन्ता – यह तो जलेबी है। बन्ता – चुप हो जा, मक्खियाँ आ जायेंगी।
- अंग्रेज को मच्छर काट रहे थे। उसने सारी लाइट बन्द कर दी। तभी रूम में जुगनू आया। अग्रेंज बोला – ओह माई गार्ड। इंडिया का मच्छर साला टार्च लेकर ढूँढ़ रहा है।

अंशिका तिवारी, बी0 ए0 भाग एक

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

टेक्निकल प्राब्लम

मैंने श्री कृष्ण से की एक प्रार्थना।

एक बार फिर से हिन्दुस्तान में जन्म ले लो महामना।

कान्हा बोले, ''अब हिन्दुस्तान में जन्म नही ले पायेंगे। जन्म ही लेना होगा तो गल्फ कंट्रीज में जायेंगे।

मैंने पूछा कोई नाराजगी या गम है?

वह बोले नही टेक्निकल प्राब्लम है।

भक्त मैं यहाँ जन्म लेने से हूँ बेबस, क्योंकि मैं अपनी माँ की हूँ आठवीं संतान।

यहाँ तो एक या दो बस।

मैंने कहा गलत रास्ता खोल रहे हैं।

ऐसा ही था तो बिहार में मिले।

मौके का फायदा क्यों नही उठाया?

आपके खानदानी हैं वह संख्या 9 तक पहुँची

फिर भी आपने

जन्म लेने का दायित्व नही निभाया।

प्रभु आप नही आये तो

भक्ति मार्ग में आती रहेगी बाधा।

कोई भी पांडा बन जायेगा राधा।

वह बोले भक्त तूने निशाना तो सही साधा।

पर चुन्नी ओढ़ लेने भर से कोई नही बन जाता राधा।

राधा तो वह है

जिसने मुझे सूखे बाँस की बाँसुरी से सुर निकालना सिखाया।

जिसकी भक्ति के बल पर मैं सोलह कलाओं का रहस्य खोल सका।

जिसकी शक्ति के बल पर मैं गीता के श्लोक बोल सका।

कोमल त्रिपाठी, बी0 ए0 भाग एक

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

प्रेरणादायक ट्वीट

1. गुणों के बिना रूप, विनम्रता के बिना विद्या, उपयोग के बिना धन, साहस के बिना हथियार, भूख के बिना भोजन, होश के बिना जोश व्यर्थ ही होता है।
2. कुएँ में उतरने वाली बाल्टी यदि झुकती है तो भरकर बाहर आती है। जीवन का भी यही गणित है जो झुकता है वह प्राप्त करता है। दादागिरी तो हम मरने के बाद भी करेंगे। लोग पैदल चलेंगे और हम कंधो पर।
3. जीत और हार आपकी सोच पर निर्भर करता है। मान लो तो हार होगी। ठान लो तो जीत होगी।
4. इंतजार करने वालों को सिर्फ उतना ही मिलता है जितना कोशिश करने वाले छोड़ देते है।
5. सच्ची मेहनत, लगन और आत्म विश्वास सफलता की कुंजी है।

कोमल त्रिपाठी, बी0 ए0 भाग एक

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

आजादी

खामोश है हिमालय
गंगा जहर हुई है
रोती है चूनर धानी
आजादी सुबक रही है
है श्रमिक बुझा बुझा
आम जन भी पस्त है
गोदामों में आनाज सड़ रहा है
किसान की गर्दन झूल रही है
पीड़ा की खामोशी में
सारे वतन पुरोधा चुप है
आत्महंता हुआ है बचपन
शिक्षा कमर तोड़ रही है
समाज की मर्यादाओं को ओढ़े
आजादी दोयम दर्जे की
आज भी खुली तिजोरी जैसी
निर्भया लुट रही है
चना चबेना खाने वाले
आजादी के योद्धा छले गये
चंद तिजोरियों में आज
आजादी दम तोड़ रही है
कुछ पंख कतरे गैरों ने
कुछ अपनो ने है नोचा
भूख, बेकारी की चोट से
सोने की चिड़िया तड़प रही है
आतंक की है दहशत
खून से धरती लथपथ
जय जय के नारों से
भारत माँ छली गयी है
गैरों से लड़ना फिर भी आसां

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

अपनो से कैसे टकरायें
गीता की दरकार
आज है फिर से
कृष्ण की धरती डोल रही है
रोती है चुनर धानी
आजादी सुबक रही है

प्रज्ञा सोनी, बी0 ए0 भाग एक

गिरगिट क्यों है बदनाम

मैंने देखा है इंसान को रंग बदलते हुए।
करते है लोग नाहक गिरगिट को बदनाम।
पलते नही है साँप अब अपने बिलों में।
मैंने देखा है इन्हे आस्तीनों में पलते हुए।

रो रही है कली क्यों पूँछो न पतझड़ से।
मैंने देखा है बागवाँ को कली मसलते हुए।
बनकर दोस्त जो मंडराता रहा मेरे आस पास।
मैंने देखा है उस दुश्मन के साथ चलते हुए।

सिवा आसमाँ के सूरज का नही ठिकाना कोई।
मैंने देखा है अरमाँ को सूरज निगलते हुए।
है मुमकिन, नामुमकिन यहाँ पर कुछ भी नही।
मैंने देखा है चाँदनी को आग उगलते हुए।

प्रज्ञा सोनी, बी0 ए0 भाग एक

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

शान्ति, भाईचारे और प्रेम का संदेश देती है बुद्ध पूर्णिमा

निराशाजनक वातावरण के युग में पूरे समाज में शान्ति, भाईचारे, प्रेम व एकता का संदेश देने वाले बुद्ध भगवान को समर्पित है बुद्ध पूर्णिमा का पर्व। यह पर्व कई मायनो में बेहद ऐतिहासिक पलों को संजोये है।

बुद्ध पूर्णिमा के दिन भगवान बुद्ध का जन्म, ज्ञान प्राप्ति और महानिर्वाण की प्राप्ति भी हुई थी। वैशाख मास की पूर्णिमा का भारतीय संस्कृति व बौद्ध समाज में अद्वितीय स्थान है। बौद्ध धर्म में आस्था रखने वाले समाज के सभी वर्गों के लोगों का यह महत्वपूर्ण त्यौहार है। मान्यता है कि इस पूर्णिमा के दिन ही गौतम बुद्ध का स्वर्गारोहण भी मनाया जाता है। इसी दिन भगवान बुद्ध को बुद्धत्व की प्राप्ति हुई थी। आज पूरे विश्व में लगभग 80 करोड़ से भी अधिक लोग बौद्ध धर्म को मानने वाले है। भारत के बिहार में स्थित बोधगया नामक स्थल बेहद पवित्र है चूंकि भगवान बुद्ध को बैशाख पूर्णिमा के दिन बोधगया में बोधिवृक्ष के नीचे बुद्धत्व की प्राप्ति हुई थी। इसीलिए कुशीनगर में एक माह का मेला भी लगाया जाता है। कुशीनगर स्थित महापरिनिर्वाण मन्दिर का स्थापत्य अजन्ता की गुफा से प्रेरित है। इस मन्दिर में भगवान बुद्ध की लेटी हुई 6.1 मीटर लम्बी मूर्ति है। यह लाल बलुई मिट्टी की बनी है। यह मूर्ति भी इसी स्थान से निकाली गई थी। मन्दिर के पूर्वी हिस्से में एक स्तूप है। कहा जाता है कि यहाँ पर भगवान बुद्ध का अन्तिम संस्कार किया गया था। श्रीलंका व अन्य दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों में इस दिन को ''बेसाक'' उत्सव के रूप में मनाया जाता है। पूर्णिमा के दिन बौद्ध अनुयायी अपने–अपने घरों में दीपक जलाते हैं। फूलों से घरों को सजाया जाता है। बौद्ध धर्म के अनुयायी बौद्ध धर्म के ग्रंथो का पाठ करते हैं। बोधगया सहित भगवान बुद्ध से सम्बन्धित सभी तीर्थ स्थलो, स्तूपो व महत्व के स्थलों को सजाया जाता है। कई जगह मेले भी लगते है। भारत के बोधगया में लोग काफी संख्या में एकत्र होते हैं। मन्दिरों व घरों में बुद्ध की मूर्ति पर फूल चढ़ाते हैं। दीपक जलाकर विधिवत पूजा करते हैं तथा इसी पवित्र बोधिवृक्ष की भी पूजा की जाती है।

बौद्ध धर्म की मान्यता है कि बैशाख की पूर्णिमा के दिन किये गये कर्मो के शुभ परिणाम प्राप्त होते है। भगवान बुद्ध का जन्म शाक्य गणराज्य की राजधानी कपिलवस्तु के निकट लुंबिनी, नेपाल में हुआ था। बुद्ध की माता महामाया देवी और पिता का नाम शुद्धोधन था। दुर्भाग्यवश बुद्ध की माता महामाया देवी का उनके जन्म के सातवें दिन ही निधन हो गया। उनका पालन पोषण मौसी, प्रजापति गौतमी ने किया। महाराजा शुद्धोधन ने अपने बालक का नामकरण करने और उसका भविष्य पढ़ने के लिए 8 ब्राहमणों को आमंत्रित किया।

सभी ब्राहमणो ने एकमत से विचार व्यक्त किया कि यह बालक या तो महान राजा बनेगा या फिर महान संत। बालक का नाम सिद्धार्थ रखा गया। लेकिन महाराजा ब्राहमणों की बातें सुनकर चिन्ता में पड़ गये। अब वे अपने पुत्र का विशेष ध्यान रखने लग गये।

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

सिद्धार्थ ने वेद, उपनिषद व अन्य ग्रंथो का अध्ययन किया। वेद, कुश्ती, घुड़दौड़, तीर कमान चलाने, रथ हांकने में उनकी कोई बराबरी नही कर सकता था। 16 वर्ष की अवस्था में उनका विवाह 'शाक्य राजकुमारी' यशोधरा के साथ हुआ। महराज शुद्धोधन को यह चिंता सता रही थी कि कहीं उनका पुत्र संत न बन जाए इसलिए तीन और महल भी बनवा दिये। लेकिन ब्राहमणों की बात धीरे धीरे सही साबित हो रही थी। उनके जीवन में कई ऐसी घटनाएँ घटी जिसके कारण उनके मन में विरक्ति का भाव पैदा होने लगा। अंततः एक दिन अपनी सुन्दर पत्नी यशोधरा और पुत्र राहुल तथा सेवक सेविकाओं का त्यागकर निकल गये। वे राजगृह होते हुए उरूवेला पहुँचे तथा वहीं तपस्या प्रारम्भ कर दी। उन्होने वहाँ पर घोर तप किया।

बैशाखी पूर्णिमा के दिन वे वृक्ष के नीचे ध्यानस्थ थे। समीपवर्ती गाँव की स्त्री को पुत्र की प्राप्ति हुई। उसने अपने बेटे के लिए वटवृक्ष की मनौती मानी थी। वह मनौती पूरी होने के बाद सोने के थाल में गाय के दूध की खीर भरकर पहुँची। सिद्धार्थ ध्यानस्थ थे। उसे लगा कि वृक्ष देवता ही पूजा करने के लिए शरीर धर कर बैठे है। सुजाता ने बड़े आदर से सिद्धार्थ को खीर खिलाई और कहा कि जैसे मेरी मनोकामना पूरी हुई है। उसी प्रकार आपकी भी मनोकामना पूरी हो। उसी रात सिद्धार्थ को सच्चा ज्ञानबोध प्राप्त हुआ। तभी से वे बुद्ध कहलाये। जिस पीपल के वृक्ष के नीचे सिद्धार्थ को बोध मिला वह बोधि वृक्ष कहलाया।

भारत माँ

भारत माँ का शीश हिमालय।
चरण है हिन्द महासागर, मातु श्री के हृदय देश में।
बहती गंगा हर हर हर।
अगल बगल माता के दोनों लहराते है रत्नाकर।
पूरब में बंगाल की खाड़ी पश्चिम रहे अरब सागर।
मध्यदेश में ऊँचे ऊँचे विंध्य सतपुड़ा खड़े हुए।
सोन, वेतवा चंबल के है यहीं कहीं चरणों के घर।
छल छल छलके यहाँ नर्मदा, यमुना केन चहकती है।
दक्षिण में गोदावरी, कृष्णा पार उतारे भवसागर।
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई रहते है सब मिल जुल कर।
यहाँ चाहते देवता रहना, स्वर्ग लोक से आ आकर।
कहीं भेद न भाव धर्म का, न ही जाति का बंधन।
करूणा, दया, प्रेम का भारत, निर्मल मन निर्झर।

सरिता, बी0 ए0 भाग एक

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

WHY GOD MADE? DAUGHTERS

WHEN GOD CREATED DAUGHTERS,

HE IS TOOK VERY SPECIAL CARE,

TO FIND THE PRECIOUS TREASURES THAT WOULD MAKE THEM.

SWEET AND FAIR WE FASHIONED THEM FROM

SUGAR AND A LITTLE BITE OF SPICES…….

HE GAVE THEM SUNNY LAUGHTER AND EVERYTHING THAT'S NICE……..

GOD SMILED WHEN THE MADE DAUGHTERS,

BECAUSE HE KNEW HE HAD CREATED

LOVE AND HAPPINESS……

KIRTI TIWARI, B. A. PART I

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

FAMES OF STATES

PUNJAB FOR FIGHTING,

BENGAL FOR WRITING,

SIKKIM FOR DUTY,

KASHMIR FOR BEAUTY,

RAJASTHAN FOR HISTORY,

MAHARASHTRA FOR VICTORY,

HARYANA FOR MILK,

KARNATAKA FOR SILK,

KERALA FOR BRAIN,

UTTAR PRADESH OF SUGARCANE,

HIMACHAL FOR APPLES,

ORISSA FOR TEMPLES,

MADHYA PRADESH FOR TRIBLES,

BIHAR FOR MINERALS,

EACH PLACE

ECAH STATE MAKES INDIA GREAT.

DIPTI SHUKLA, B.A. PART II

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

माँ के नाम

- मैंने माँ की हथेली पर एक काला तिल देखा और कहा माँ यह दौलत का तिल है। माँ ने अपने दोनो हाथों में मेरा चेहरा थामा और कहाँ हाँ बेटी। देखो मेरे दोनों हाथों में कितनी दौलत है।
- एक दिन मैं कालेज से घर आने के लिए निकली तो देखी आसमान में बादल थे। लग रहा था कि बारिश होगी। इस लिए सोची कि घर जल्दी पहुँच जाऊँगी पर रास्ते में ही बारिश शुरू हो गई और मैं भीग गयी। घर जाते ही बड़ी बहन ने कहा, थोड़ी देर रूक नही सकती थी। बड़े भाई ने कहा कहीं साइड में खड़ी हो जाती। पापा ने कहा खड़ी कैसे हो जाती इनको बारिश में भीगने का शौक जो है। इतने में मम्मी आई और सिर पर तौलिया रखते हुए बोली ये बारिश भी न, थोड़ी देर रूक जाती तो मेरी बेटी घर आ जाती। सच माँ तो माँ ही होती है।
- किसी ने माँ के कंधे पर सर रख के पूछा, ''माँ कब तक अपने कंधे पर सोने दोगी? माँ ने कहा, ''जब तक लोग मुझे अपने कंधे पर न उठा लें।
- दिन भर के काम के बाद बेटी घर आई। भाई पूँछता क्या लाई? पापा पूँछते है कितना कमाई? लेकिन माँ पूँछती बेटी कुछ खायी?

कोई नही रूकता इस जिन्दगी में किसी के लिए।
बस सब यूँ ही चलते रहते है।
कौन देता है उमर भर सहारा।
लोग तो जनाजे में भी कंधे बदलते रहते है।

तकदीर के खेल से कभी निराश नही होते।
जिन्दगी से कभी उदास नही होते।
हाथों की लकीरों पर मत करना विश्वास।
तकदीर तो उनकी भी होती है जिनके हाथ नही होते।

नौसीन बानों, बी0 ए0 भाग एक

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

चरखा हमारे लिए कामधेनु है

गाँधी जी शिक्षा के माध्यम से महिलाओं के लिए आर्थिक सुरक्षा का रास्ता तलाशने में विश्वास करते थे और जानते थे कि किसी महिला की छोटी सी आमदनी भी परिवार के लिए कितना बड़ा संबल हो सकता है। इसके लिए उनके पास एक रास्ता था, चरखा। उन्होने भारतीय समाज के कायाकल्प की दिशा में चलाई गई राजनीतिक, सामाजिक अथवा विकास सम्बन्धी गतिविधियों में महिलाओं के लिए अगर चरखे को एक अनिवार्य यन्त्र के रूप में देखा, तो इसके पीछे गाँधी जी के दिमाग में वह भारत था जिसकी नींव महिलाओं के आत्म सम्मान से जुड़ी थी। गाँधी जो ने जिस चरखे से सूत कातकर देशवासियों में स्वराज और आजादी की अलख जगाई थी वह वैश्वीकरण और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की भीड़ में आज जरूर कहीं पीछे छूट गया है, लेकिन बापू का यह चरखा आज भी प्रासंगिक है और बेरोजगारी से जूझ रही बड़ी आबादी को रोजगार मुहैया करा सकता है। विनोवा जी ने कहा था कि गरीब इंतजार नही कर सकता। उसे अविलम्ब काम और रोटी चाहिए। आप काम नही दे सकते, लेकिन मेरा चरखा ऐसा कर सकता है। आज बाजार की दिलचस्पी खादी में बढ़ रही है। ऐसे में चरखे की ताकत भी बढ़ी है। हमें उस ताकत को पहचानना होगा और फिर महिलाओं को चरखे से जोड़ने के लिए एक रोचक अभियान भी चलाना होगा। चरखा चलेगा तो रोजगार का चक्र चलेगा, मंहगाई का रथ थमेगा।

पूजा यादव, बी0 ए0 भाग एक

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

भ्रूण हत्या

प्रकृति की देन हूँ मैं, रब की कला हूँ मै।
अभी बनी भी नही, पूरी मुझे बनने तो दे।
माँ मुझे इस दुनिया में आने तो दे।1।
नही बनूँगी बोझ तेरे सर पर बेटा बन कर दिखाऊँगी।
इस घर का कुछ कर दिखाने की हिम्मत जुटाने तो दे।
माँ मुझे इस दुनिया में आने तो दे।2।
किसे हक है मुझे मारने का, मेरे अरमानों को ये जिन्दा गाड़ने का।
तू भी किसी की बेटी है, अपने आप को बेटी की माँ कहलाने तो दे।
माँ मुझे इस दुनिया में आने तो दे।3।
भगवान की बनाई कली हूँ मैं, स्वर्ग की बाहों में पली हूँ मैं।
तेरी बेटी बनकर मिलने आई हूँ तुझसे।
तू ही साँस छीनना चाहती है मुझसे।
अभी मुझे पूरी साँस लेने तो दे।
माँ मुझे इस दुनिया में आने तो दे।4।

माँ दुर्गा की पूजा करके।
भक्त बड़े कहलाते हो।
कहाँ गयी वो भक्ति जो।
बेटी को मार गिराते हो।
कलियाँ जो तोड़ी तुमने।
फूल कहाँ से लाओगे।
बेटी की हत्या करके।
बहु कहाँ से पाओगे।

अर्चना सिंह, बी0 ए0 भाग एक

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

एक पल मुस्कान के लिये

- पत्नी अपने पति को सुधारने के लिये काले कपड़े पहन कर घर के बाहर खड़ी हो गई। जब पति घर में आया तो पति – तुम कौन हो? पत्नी – चुड़ैल। पति – हाथ मिला, मैं तेरी बहन का पति।
- छोटे – वो लड़की कितनी सुन्दर है। बड़े – मुझे उसका नाम भी पता है। छोटे – क्या नाम है उसका? बड़े – वो बैंक में काम करती है। उसके काउंटर पर लिखा था चालू खाता।
- पत्नी – जी आपको क्या अच्छा लगता है? मेरी समझदारी या मेरी ब्यूटी। पति – मुझे तो ये तुम्हारी मजाक करने की आदत बहुत अच्छी लगती है।
- पुलिस – हमें आपके घर की तलाशी लेनी है। सुना है आपके घर में विस्फोटक सामाग्री है। आदमी – खबर तो पक्की है मगर अभी वो अपने मायके गई है।

रूकसार बानों, बी0 ए0 भाग तीन

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

कृपया इसे न पढ़ें

कमाल है। शीर्षक पढ़ने के बाद भी आप इसे पढ़े जा रहे हो। अब बस भी कीजिए। मान भी जाइये। पन्ना पलट दीजिए इसे पढ़कर आप अपना बहुमूल्य समय नष्ट कर रहे है। जितना नष्ट हो चुका है उसे भूल जाइये और इसे पढ़ना बन्द कीजिए। लगता है, आप समय की कीमत के बारे में कुछ नही जानते है। अरे अब तक पढ़े जा रहे है। इतनी बातें सुनकर तो राजनीतिक भी अपनी गद्दी छोड़कर भाग जायेगा और आप हैं कि एक लेखक को नही छोड़ सकते हैं। देखिये पढ़ने की सामग्री आपको बहुत मिलेंगी इसी लिए इसे पढ़ना छोड़ दीजिए। मैं आपकी हमदर्द हूँ इसी लिए सुनिये या तो पन्ना पलट दीजिए और कुछ नही तो कम से कम अपनी आँख बन्द कर लीजिए। देखिये यह कोई ज्ञानवर्धक लेख नही है जिसे पढ़कर आपको कुछ लाभ मिल सकेगा। अब भी समय है मान जाइये। अपना समय किसी उपयोगी लेख पढ़ने में गवाइये। आपका कोई इलाज नही है। वैज्ञानिक चाँद को घर ला सकता है पर आपका इलाज ढूढ़ना उनके लिए नामुमकिन है। क्या आपने मुझे पागल समझ रखा है या समय से आपको दुश्मनी है। पढ़ते पढ़ते यहाँ तक पहुँच गये। बताइये क्या मिला आपको? इसे पढ़कर आपका समय ही तो नष्ट हुआ कि नही। मैंने तो पहले ही कहा था, कृपया इसे न पढ़े। लेकिन आप पर तो समय नष्ट करने का और फिजूल पढ़ने का भूत सवार है। लेकिन इसमें मेरा क्या जायेगा। मैंने तो हमदर्द बनकर समझाना चाहा लेकिन आप तो माने ही नही।

दीप्ती शुक्ला, बी0 ए0 भाग दो

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

शब्द लड़ते हैं अँधेरे में

चुप्पियों के
इस बसेरे में
शब्द लड़ते हैं अंधेरे में।1।
बोझ है सिर पर तनावों का
कब तलक बैठें
बेचारे चुप
दर्द के सुनसान डेरे में
शब्द लड़ते हैं अंधेरे में।2।
उम्र से पहले हुए जर्जर
वक्त ने सब काट डाले पर
हो गई खुशियाँ नदारद अब,
झुर्रियाँ हैं सिर्फ चेहरें में
शब्द लड़ते हैं अंधेरे में।3।
पूछते फिरते सभी से यूं
चुक गई सहसा मुखरता क्यूं
मजबूर होकर घूमते हैं ये,
जिन्दगी के तंग घेरे में,
शब्द लड़ते हैं अंधेरे में।3।

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

OUR DUTY AS A CITIZEN OF INDIA

WE ARE INDIANS. INDIA IS OUR MOTHERLAND. WE SHOULD OF BEING INDIAN. IT HAS GIVEN US WATER TO DRINK. IT HAS BEING OUR PLAY GROUND. SO WE OWN HAVE SOME DUTIES TOWARDS IT. WE MUST PERFORM OUR DUTIES HONESTY.

"LAND OF OUR BIRTH.
WE PLEDGE TO THEE.
OUR LOVE AND TOIL IN THE YEARS TO BE;
WHEN WE ARE GROWN AND TAKE OUR PLACE,
AS MEN AND WOMEN WITH OUR RACE."

WE MUST BE HEALTHY. UNLESS WE ARE UNHEALTHY, WE CANNOT BE A GOOD CITIZEN OR A PATRIOT. HEALTH IS THE BASIS OF ALL GOOD QUALITIES. WE ARE NEEDS GOOD EDUCATION IN CITIZEN OF INDIA. WITHOUT GOOD EDUCATION WE CANNOT BE GOOD. EDUCATION ENLIGHTENS US.

IF WE ARE PROPERLY EDUCATED, WE CAN KNOW OUR DUTIES. WITHOUT PERFORMING OUR DUTIES SINCERELY WE CANNOT SAVE THE HONOR OF OUR MOTHERLAND. GOOD EDUCATION LEADS US TO BE DISCIPLINED AND UNITED. SO WE SHOULD PRAY TO GOD –

"TEACH US TO RULE OVER SELVES ALWAYS,
CONTROLLED AND CLEARLY NIGHT AND DAY.
THAT WE MAY BRING, IF NEED ARISE,
NO MAIMED OR WORTHLESS SACRIFICES."

IF WE ARE UNITED HEALTHY AND DISCIPLINED OUR COUNTRY WILL PROGRESS.

HINA SEIKH, B. A. PART III

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

विचार

- यदि आप सही हैं तो आपको गुस्सा होने की जरूरत नहीं और यदि आप गलत है तो आपको गुस्सा होने का कोई हक नहीं।
- जिन्दगी जीना आसान नहीं होता।
  बिना संघर्ष कोई महान नहीं होता।
  जब तक न पड़े हथोड़े की चोट।
  पत्थर भी भगवान नहीं होता।
- माफी माँगने से कभी यह साबित नही होता कि हम गलत हैं और वो सही है। माफी का असली मतलब है कि हममें रिश्ता निभाने की काबिलियत उससे ज्यादा है।
- अगर यह लगने लगे कि लक्ष्य हासिल नहीं होगा तो लक्ष्य को नही बल्कि अपने प्रयासों को बदलें।
- लाइफ में कभी किसी को बेकार मत समझना। ये याद रखना कि बंद घड़ी भी रोज दो बार सही समय बताती है।
- तुम्हे पता है, प्रेम अंधा क्यों होता है? क्योंकि आपकी माता ने आपका चेहरा देखे बिना आपको प्रेम करना शुरू कर दिया था।
- लगातार हो रही असफलताओं से निराश नहीं होना चाहिए। कभी कभी गुच्छे की आखिरी चाभी ताला खोल देती है।

प्रज्ञा सोनी

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

बेटियाँ

ओस की बूँद की तरह होती हैं, बेटियाँ।
माँ बाप की दुलारी होती हैं, बेटियाँ।
जान से प्यारी होती हैं, बेटियाँ।
माँ बाप के दर्द में हमदर्द हेाती हैं, बेटियाँ।

रोशन करेगा बेटा तो बस एक कुल को।
दो दो कुल की लाज होती हैं, बेटियाँ।
हीरा है अगर बेटा तो सच्ची मोती है, बेटियाँ।
काँटों की राह पर चलती है, बेटियाँ।

गर कहें तो प्यारी अमानत हैं, बेटियाँ।
लेकिन बेटों से भी अपनी होती हैं, बेटियाँ।
बहुत चंचल, बहुत खुशनुमा सी होती हैं, बेटियाँ।
नाजुक सा दिल रखती हैं, मासूम सी होती हैं, बेटियाँ।

बात बात पर रोती हैं, नादान सी होती हैं, बेटियाँ।
रहमत से भरभूर, खुदा की नेयमत हैं, बेटियाँ।
घर महक उठा है, जब मुस्कुराती हैं, बेटियाँ।
अजीब सी तकलीफ होती, जब दूसरे के घर जाती है, बेटियाँ।

घर लगता है सूना सूना, कितना रूला के जाती हैं, बेटियाँ।
खुशी की झलक, बाबुल की लाडली होती हैं, बेटियाँ।
ये हम नही कहते, ये तो ''भगवान'' कहता है।
कि जब मैं बहुत खुश हेाता हूँ तो जनम लेती हैं प्यारी सी बेटियाँ।

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

आकाशवाणी समाचार

मैं एक साथ मुसाफिरखाना अमेठी एवं मंगलम् महिला महाविद्यालय केन्द्र से बोल रही हूँ। समय कुछ बजने वाले हैं। अब लीजिए मोनम कुमारी से पूरा समाचार सुनिये –

मुसाफिरखाना से सुलतानपुर जाने वाली सड़क पर स्थित सुलतानपुर के पास गोमती नदी में पानी के घर्षण के कारण आग लग गयी। मछलियाँ अपनी अपनी जान बचाकर पेड़ पर चढ़ गयी और कुछ अपने–अपने बिल में घुस गयीं। इस तरह जान खतरे में देखकर एक छोटी मछली ने मुसाफिरखाना फायर ब्रिगेड को फोन किया। फायर ब्रिगेड की आग बुझाने वाली मशीन गयी। नदी में पेट्रोल और मिट्टी का तेल छिड़क कर आग बुझाई गई। इस तरह मछलियों एवं कछुओं की जान बची।

साथियों अब यहीं पर समाचार यहीं समाप्त करते हैं। धन्यवाद

मोनम कुमारी, बी0 ए0 भाग दो

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

माँगा खुशी मिला गम

दिल तोड़ना हमारी आदत नहीं।

दिल हम किसी का दुखाते नहीं।

भरोसा रखना हमारी दोस्ती पर।

दोस्त बनकर हम किसी को भुलाते नहीं।

हम अपना बनाकर किसी को रूलाते नहीं।

दिल में बसाकर किसी को भुलाते नहीं।

हम तो अपनों के लिए जान भी दे दें।

पर लोग सोचते हैं हम रिश्ते निभाते नहीं।

शमा बुझकर भी जल सकती है।

कश्ती तूफाँ से निकल सकती है।

इरादा मत बदलो मायूस होकर दोस्त।

किस्मत कभी भी बदल सकती है।

ऐसा कुछ कर दिखालाओ।

दुनिया सारी खुश हो जाय।

अपने घर में दीप जले।

दुश्मन के घर तक उजाला जाये।

हर कर्ज दोस्ती का अदा कौन करेगा।

जब तुम ही न रहे तो दोस्ती कौन करेगा।

ऐ रब मेरे दोस्तों को सलामत रखना।

वरना मेरी अर्थी को सलाम कौन करेगा।

गुंजन गुप्ता, बी0 ए0 भाग एक

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

माँ

कब्र के आगोश में जब थक के सो जाती माँ।

तब कहीं जाकर थोड़ा चैन पाती है माँ।।

खून के रिश्तों के गहराइयाँ तो देखिए।

चोट लगती है हमें, चिल्लाती है माँ।।

जब परेशानी में घिर जाते हैं परदेश में।

आँसुओं को पोंछने ख्वाबों में आती है माँ।।

चाहे खुशियों में हम माँ को भूल जायें।

जब मुसीबत सिर पर आये तो याद आती है माँ।

लौटकर वापस सफर से जब भी घर आते हैं हम।

लगाकर अपने गले से सर को सहलाती है माँ।

शुक्रिया से हो ही नही सकता उसका कर्ज अदा।

मरते मरते भी दुआ जीने की दे जाती है माँ।

प्यार कहते हैं किसे ममता क्या चीज है।

यह तो उनसे पूँछना जिनके पास नही है माँ।

गुंजन गुप्ता, बी0 ए0 भाग एक

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

आत्मतत्व की खोज

सत्य की कसौटी पर खरा वही उतरा है जो सनातन है। जो आज भी है कल भी है और हमेशा रहेगा। धन, तन, मन बुद्धि से परे सनातन आत्मा है पर है क्या ये आत्मा? वेदांत उस सनातन सत्य को समझने के लिए 'चन्द्रशाख न्याय' का उदाहरण देता है। कड़कती दोपहर में दूर आकाश में चाँद आपको नजर आ रहा है। परन्तु अपने मित्र को वह चाँद दिखाने में असफल हो रहे हैं तो उस मित्र को दिखाने के लिए जो उपलब्ध है उसका सहारा लेकर उस चाँद का दीदार कराते हैं। सबसे पहले सामने वाले पेड़ पर ध्यान केन्द्रित करने को बोलोगे। फिर धीरे धीरे पेड़ के तने पर ध्यान ले जाकर फिर शाखा पर ध्यान ले जायेंगे। उसी प्रकार संतो ने उस सनातन सत्य को दिखाने के लिए सांसारिक वस्तुओं का सहयोग लिया। परन्तु संसारी वस्तुएँ बेमानी हो जाती है जब सनातन सत्य का दीदार होता है। इसी तरह हमें भी उस सनातन आत्म को जानने के लिए इस नाशवान संसार का उपयोग करना है। जिसके दीदार के बाद संसार के बंधनो से मुक्त हो जायेंगे। बंधनो से मुक्त होना बड़ा सुखद अनुभव है। परन्तु हमें बंधनों की इतनी आदत पड़ गयी है कि बंधन मुक्त होने का विचार भी हमें रास नही आता। इस लिए जो हमें बन्धन से मुक्त करा सकता है वो हम स्वयं हैं।

बिनती, बी0 ए0 भाग तीन

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.

कहानी

जनवरी की बात है। कड़ाके की ठंड और धुंध के कई दिनों बाद धूप निकली थी। मैंने सोचा कि बाजार जाकर कुछ दैनिक आवश्यकता का सामान ले आँऊ। घर से थोड़ी दूर ही निकल पाई थी कि मुझे रास्ते में एक अंधी बूढ़ी भिखारिन दिखाई पड़ी। सर्दी के मौसम में बूढ़ी भिखारिन को देखकर मुझे दया आ गई। मैंने दयावश एक सिक्का उसके पात्र में डाल दिया। सिक्के की खनक के साथ ही उस भिखारन के चेहरे पर मुस्कान तैर गई। वह दुआ देते हुये बोली कि हमका चौराहे की तरफ का रास्ता बता देओ। मैंने एक दृष्टि उसके मैले–कुचैले कपड़ों पर डाली और शब्द संकेत से उसे रास्ता बता दिया। मेरी बात न समझ पाने के कारण वह गलत दिशा में बढ़ गयी और दूसरी ओर से आती साइकिल से टकरा गई। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे कि गिरने की वजह से उसे चोट भी लग गई है लेकिन नजर अदांज कर दिया। क्योंकि मेरे मन में यह भाव था कि ऐसे न जाने कितने लोग घूमते रहते है। हम सबकी मदद तो कर नही सकते है। मैं उदासीन भाव से यह सब देखती रही किन्तु मैंने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नही की। साइकिल सवार ने साइकिल से उतर कर उसे सही दिशा बताई और वह जिधर जाना चाहती थी, उधर बढ़ गई।

मैं घर गृहस्थी के बारे में सोचते हुए रिक्शे पर बैठकर बाजार चली गयी। बाजार में सड़क पार करते समय मैं अचानक लड़खड़ा गई जिससे सामने से आती मोटर साइकिल से टकरा गई। मुझे तेज दर्द हुआ और मैं जल्दी जल्दी खरीददारी करके घर की वापसी की। अब मुझे उस अंधी बूढ़ी भिखारिन के प्रति किये गए अपने व्यवहार की याद आई। मुझे लगा कि शायद उस बुजुर्ग भिखारिन को मुझसे ज्यादा चोट लगी होगी। मेरा मन आत्मग्लानि से भर उठा। काफी समय बीत गया वह भिखारिन मुझे नही दिखी। मैं उसका प्रतिदिन इंतजार करने लगी, किन्तु काफी समय तक गली में उसकी आवाज सुनाई नही दी। दो महीन पश्चात् अचानक उसकी आवाज सुनकर मैं घर से बाहर आई। मैंने उससे इतने दिनों बाद इधर आने का कारण पूछा तो उसने बताया कि एक दिन सड़क पार करते समय मुझे चोट लग गई थी, दो महीने बीत गए मैं बिस्तर से उठ ही नही पाई। अब ठीक हुई तो इधर निकल आई।

मैंने पश्चातापस्वरूप उसे अपने हाथों से गर्म शाल ओढ़ाया। इससे मुझे तो दुआ मिली ही साथ ही उसके स्पर्श से मन को सुखद अनुभूति भी हुई। अब मैंने महसूस किया कि हम सब एक ही परमपिता की संतान है। शरीर के अंगो की ही भाँति वह सभी से बराबर स्नेह रखता है। इंसान इंसान के बीच भेदभाव की दीवार हम इंसानो ने ही खड़ी की है। उसी क्षण मैंने संकल्प किया कि मन से भेदभाव की दीवार को ढहाकर प्रत्येक जरूरतमंद की सहायता में अग्रसर रहूँगी।

प्रज्ञा सोनी, बी0 ए0 भाग एक

Please purchase 'docPrint PDF Driver' on http://www.verypdf.com/artprint/index.html to remove this message.